idara

बदनज़री का
इलाज

कुरआन व हदीस की रोशनी में

Maktabe Ashraf

मौलाना मुहम्मद हाशिम जोगवाड़ी मज़ाहरी

बदनज़री का इलाज

कुरआन व हदीस की रोशनी में

Maktabe Ashraf

कुरआन व हदीस की रोशनी में

लेखक
मौलाना मुहम्मद हाशिम जोगवाड़ी मज़ाहरी

www.idaraimpex.com

© इदारा

इस पुस्तक की नक़ल करने या छापने के उद्देश्य से किसी पृष्ठ या शब्द का प्रयोग करने, रिकॉर्डिंग, फोटो कॉपी करने या इसमें दी हुई किसी भी जानकारी को एकत्रित करने के लिए प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है।

बदनज़री का इलाज

कुरआन व हदीस की रोशनी में

लेखक

मौलाना मुहम्मद हाशिम जोगवाड़ी मज़ाहरी

प्रकाशन : 2015

ISBN 81-7101-485-2

TP-453-15

Published by Mohammad Yunus for

IDARA IMPEX

D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar
New Delhi-110 025 (India)
Tel.: +91-11-2695 6832 & 085888 33786
Fax: +91-11-6617 3545 Email: **sales@idara.co**
Online Store: **www.idarastore.com**

Retail Shop: **IDARA IMPEX**
Shop 6, Nizamia Complex, Gali Gadrian, Near Karim's Hotel
Hazrat Nizamuddin, New Delhi-13 Tel.: 085888 44786

Maktabe Ashraf

विषय-सूची

Maktabe Ashraf

Maktabe Ashraf

कुछ बातें

—मौलाना मुफ़्ती इस्माईल कछोलवी
जामिया इस्लामिया डाभेल (गुजरात)

नह्मदुहू व नुसल्ली अ़ला रसूलिहिल करीम, अम्मा बाद!

अल्लाह के एहसान और इनाम, जो इस ख़ाक के पुतले पर किए गए हैं, बेहद व हिसाब हैं। अगर कोई इसे गिनना चाहे, तो हज़ार कोशिश के बावजूद इसे गिना नहीं जा सकता। कुरआन पाक में इर्शाद है कि—

وان تعدوا نعمة الله لاتحصوها

इन तमाम इनामों में से हम सिर्फ़ ज़ाहिर में छोटी चीज़ यानी आंख के बारे में सोचते हैं, तो हैरान रह जाते हैं, किस क़दर नर्म व नाज़ुक चीज़ को किस हिफ़ाज़त से रखा गया है और कितना बड़ा फ़ायदा है? यहां तक कि हर एक आदमी यह एतक़ाद किए हुए है कि जिसकी आंख गई, उसकी दुनिया गई, लेकिन कितने लोग ऐसे हैं जो उसको सही मसरफ़ में इस्तेमाल करते और अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं और उसकी हिफ़ाज़त की कोशिश करते हैं।

कुरआ़न पाक में आंख के इस्तेमाल के अलग-अलग मौक़ों का ज़िक्र किया गया है, कहीं इर्शाद होता है—

افلا ينظرون الى الابل كيف خلقت

दूसरी जगह इबरत पकड़ने की दावत देते हुए फ़रमाया—

فانظروا كيف كان عاقبة المجرمين

तो कहीं आंख को ग़लत इस्तेमाल न करने के लिए इर्शाद हुआ—

قل للمؤمنين يغضوا من ابصارهم و يحفظوا فروجهم

औरतों को भी मुस्तक़िल तौर पर इर्शाद हुआ—

وقل للمؤمنت يغضضن من ابصارهن

और कहीं आंख की नेमत के इनायत किए जाने की वजह इस तरह बताई गई—

وجعل لكم السمع والابصار والافئدة لعلكم تشكرون

और सूरः सज्दा में इर्शाद फ़रमाया—

وجعل لكم السمع والابصار والافئدة قليلا ما تشكرون

इसके साथ ही आख़िरत में उसके बारे में सवाल भी किया जाएगा, इसको इस तरह ज़िक्र किया गया कि—

ان السمع والبصر الخ

ग़रज़ यह कि अल्लाह की बनाई और पैदा की हुई चीज़ों में नज़र करके, उससे बसीरत और मारफ़त हासिल करते हुए इस क़ीमती नेमत पर शुक्रिया अदा करते रहना चाहिए था, मगर हज़ार अफ़सोस कि हम लोग आज अपनी इन आंखों से हर नाजायज़ और मना की गई चीज़ों को देखने में ऐसे लग गए कि उसकी बुराई भी हमारे दिलों से निकल चुकी है, ख़ास तौर से हमारे इस इलाक़े में जहां बेपरदगी आम है और लिखने वाले के रहने की जगह जहां बेपरदगी के साथ

उर्यानियत (नंगापन) भी अपने उरूज पर है, आम व ख़ास लगभग सभी के दिलों से यह बात निकली हुई है कि यह बदनज़री भी इतनी ख़तरनाक चीज़ है और हद तो यह है कि नए लोगों में यह एहसास भी बाक़ी नहीं रहा कि यह भी कोई गन्दी और गुनाह की चीज़ है।

ऐसे वक़्त में वाक़ई एक ऐसी किताब की ज़बरदस्त ज़रूरत थी जिसमें सिर्फ़ इसी मज़्मून को तफ़सील के साथ कुरआन पाक, हदीसे रसूल मक़बूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम, साथ ही अकाबिर औलिया और बुज़ुर्गों के मलफ़ूज़ात और हिदायतों को जमा किया गया हो और वादे-वईद और हिकायतों से, उसके बचने के तरीक़ों को दिलचस्प अन्दाज़ में लाया गया हो। रफ़ीक़े मोहतरम मौलाना हाशिम जोगवाड़ी रश्क और मुबारकबाद के क़ाबिल हैं कि उन्होंने हिम्मत करके मौजूदा दौर के इस अहम तक़ाज़े को पूरा करने के लिए क़लम उठाया और वाक़ई इस मौज़ू का हक़ अदा कर दिया। अल्लाह तआ़ला कुबूलियत के साथ बेहतरीन बदला नसीब फ़रमाए। (आमीन)

وصلی اللہ تعالیٰ علی خیر خلقه محمد و آله واصحابه و اتباعه اجمعین

वसल्लल्लाहु तआ़ला अ़ला ख़ैरि ख़ल्क़िही मुहम्मदिंव-व आलिही व अस्हाबिही व इत्तबाइही अजमईन०

Maktabe Ashraf

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुक़द्दमा

الحمد لله رب العالمين والعاقبة للمتقين والصلوة والسلام على سيد

المرسلين وخاتم النبين وعلى آله الطيبين واصحابه اجمعين— امابعد

ब्रिटेन और यूरोप के गन्दे माहौल को कौन नहीं जानता? जहां उर्यानियत (नंगापन) और ऐशपसन्दी अपनी इंतिहा को पहुंच गई है और तअ़ज्जुब की बात यह है कि हलाकतखेज़ी (तबाही) की इंतिहा को पहुंचाने वाले इन आमाल का नाम बेवक़ूफ़ों ने 'नई तहज़ीब' रख छोड़ा है और अमीर-ग़रीब, पढ़े-लिखे, बे पढ़े-लिखे, अक़्लमंद और बेवक़ूफ़ सभी इस तहज़ीब पर ऐसे फ़िदा हैं कि नाजायज़ ख़्वाहिशों को पूरा करने के लिए पार्लियामेंटों में क़ानूनी जवाज़ देकर अपनी तसल्ली कर लेते हैं।

Maktabe Ashraf

ऐसे माहौल में रह कर पाकबाज़ मुत्तक़ी इंसान के लिए अपने दामन को बचाना इंतिहाई मुश्किल है, लेकिन ख़ुदा और रसूल सल्ल० पर क़ुरबान कि मुसलमानों के लिए हर तंगी व तारीकी में राह बताई। किसी भी अंधेरे घर में मुसलमान पहुंच जाए, अगर उसके पास शरीअ़ते बैज़ा (रौशन शरीअ़त) का चिराग़ है, तो वह ठोकरें नहीं खाएगा। चुनांचे ऐसे माहौल के असरात से हिफ़ाज़त के लिए अल्लाह ने अपने कलामे पाक में इर्शाद फ़रमाया है—

'ऐ मेरे हबीब (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)! आप मुसलमान

मर्दों से कह दीजिए कि अपनी निगाहें नीची रखें। हदीस पाक में सरवरे कौनैन सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया है कि निगाह शैतान के तीरों में से एक तीर है। क़ुरआन पाक की यह आयत और यह हदीसे पाक का मुबारक इर्शाद इस रिसाले का मतन और ख़ुलासा और निचोड़ है। यह रिसाला उसी की तफ़सील व तफ़सीर है। अल्लाह जल्ल ल शानुहू इख़्लास के साथ मुझे भी उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और पढ़ने वाले को भी।

न तो मेरी इल्मी लियाक़त है और न तो मादरी ज़ुबान उर्दू है और न ही उर्दू अदब से मुनासबत है, अल्लाह करे यह रिसाला मेरी निजात का ज़रिया बन जाए। हर किसी को अल्लाह जल्ल ल शानुहू अ़मल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। इसीलिए अल्लाह का नाम लेकर शुरू कर दिया और रिसाले को नौ बाबों पर तक़सीम किया है। **पहला बाब** (अध्याय), क़ुरआ़न पाक की आयतों में, इसमें तीन आयतें ज़िक्र की गई हैं। हर आयत के ज़ैल में अलग-अलग तफ़सीरों से फ़ायदे लिखे हैं। **दूसरे बाब** में वे हदीसें हैं जिनमें बदनज़री पर तंबीहात की गई हैं। इस बाब में ग्यारह हदीसें हैं, जिनमें कहीं-कहीं फ़ायदे भी लिखे हैं। **तीसरा बाब**, बदनज़री के नुक़सानों और उसकी क़िस्मों पर है। चौथा, अच्छी नज़र और उसकी क़िस्मों पर है। **पांचवां बाब**, बदनज़री के बारे में बुज़ुर्गों के इर्शादात पर है जो कुल चालीस हैं। उनमें मुर्शदी व उस्तादी शैख़ुल हदीस हाजी मौलाना मुहम्मद ज़करीया साहब मरहूम व मग़्फ़ूर के सात इर्शादात भी शामिल हैं, जो बड़े ही अहम हैं। अगले मज़्मूनों से और बुज़ुर्गों के इर्शादात से जब बदनज़री की क़बाहत (बुराई) और शनाअ़त (ख़राबी) मालूम हो गई तो उनके इलाज के बारे में **छठा बाब** है, जिसमें 21 इलाज हैं, जो ज़्यादातर तर्बियतुस्सालिक से लिए गए हैं। **सातवां बाब** बुज़ुर्गों के वाक़िआ़त

पर है, जो कुल 19 हैं। आख़िर में एक ख़ात्मा है जिसमें पीराने पीर रहमतुल्लाह अ़लैह का इर्शाद है जो बहुत ही अहम, और गोया पूरी किताब का खुलासा, निचोड़ और लुब्बे लुबाब है। इस पर रिसाला को ख़त्म किया।

अल्लाह जल्ल ल शानुहू इसे कुबूल फ़रमाएं, जो ख़ताएं इसमें हो गईं अल्लाह जल्ल ल शानुहू उससे दरगुज़र फ़रमाएं और ख़ात्मा ईमान पर फ़रमाएं और मग़फ़िरत का ज़रिया बनाए। (आमीन)

Maktabe Ashraf

बाब-1

वे आयतें जिनमें निगाह की हिफ़ाज़त का हुक्म है

قل للمومنين يغضوا من ابصارهم ويحفظوا فروجهم ذلك ازكىٰ لهم
ان الله خبير بما يصنعون

'आप मुसलमान मर्दों से कह दीजिए कि अपनी निगाह नीची रखें (यानी जिस 'उज़्व' (अंग) की तरफ़ बिल्कुल ही देखना नाजायज़ है, उसको बिल्कुल न देखें और जिसको वैसे तो देखना जायज़ है, मगर शहवत से देखना जायज़ नहीं, उसको शहवत से न देखें) और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें। (यानी नाजायज़ महल्ल (जगह) में शहवतरानी न करें, जिसमें लिवातत और ज़िना सब दाख़िल हैं) यह उनके लिए ज़्यादा सफ़ाई की बात है (और इसके ख़िलाफ़ में आलूदगी है ज़िना या मुक़द्दमा ज़िना में)। बेशक अल्लाह को सब ख़बर है जो कुछ लोग किया करते हैं। (पस ख़िलाफ़ करने वाले सज़ायाबी के हक़दार होंगे।)—सूरः नूर, रुकूअ् 4 (तफ़सीर ब्यानुल क़ुरआन, भाग 2, पृ० 695, ताज कम्पनी)

फ़ायदा—आयत में अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने मुसलमानों को हुक्म दिया है कि जिनको अल्लाह ने हराम किया है उन पर निगाह न डालें; हराम चीज़ों से नज़रें नीची कर लें। जैसे शहवत के साथ किसी की तरफ़, चाहे वे अपने हों या पराए, मर्द हों या

औरत, जान-बूझ कर निगाह डालना जायज़ नहीं है, अलबत्ता बीवी हो या बांदी, तो हर्ज नहीं।

अचनाक नज़र माफ़ है

पहली बार किसी पर बिला इरादा नज़र पड़ जाए तो उसमें पकड़ नहीं है। अलबत्ता जान-बूझ कर दोबारा नज़र न डाली जाए। हज़रत बुरैदा रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत अ़ली रज़ि० से फ़रमाया कि अ़ली! पहली (अचानक) नज़र के पीछे दूसरी बार (इरादा करके) नज़र न करना। पहली नज़र तो जायज़ है, अलबत्ता दूसरी नज़र मुबाह नहीं है।(तफ़सीरे इब्ने कसीर, पारा न० 18, पृ० 59, मकतबा फ़ैज़ुल क़ुरआन)

शर्मगाह की हिफ़ाज़त—आयत में एक जगह हुक्म यह भी है कि अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करें। हज़रत मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी रह० फ़रमाते हैं कि यानी हरामकारी से बचे और सतर किसी के सामने न खोले। यह निगाहों का झुकाना और शर्मगाह की हिफ़ाज़त करना, यह उनके लिए निहायत पाकीज़ा या निहायत फ़ायदेमंद अमल है, इसमें ज़िना का ख़तरा नहीं रहता।

(फ़वाइदे उस्मानी)

दिल को पाक रखना—बदनज़री से और उससे बढ़कर ज़िना कर बैठने से दिल स्याह हो जाता है, दिल में पाकीज़गी नहीं रहती और जब दिल के अन्दर ज़ुलमत होगी तो इबादत की तरफ़ रग़बत ख़त्म हो जाएगी। दिल को पाक व साफ़ रखा जाए कि अपने आपको बिल्कुल गुनाहों से बचाते हुए दिलों को पाक व साफ़ रखा जाए कि अल्लाह जल्ल ल शानुहू को हमारे सारे ही आमाल की पूरी-पूरी ख़बर

Maktabe Ashraf

है। अल्लाह से कोई ज़र्रा छिपा हुआ नहीं है, वह हर वक़्त हमारे आमाल व अहवाल को देखते हैं, इसलिए हर वक़्त यह ध्यान और ख़्याल रहे कि अल्लाह को मेरे सब आमाल की ख़बर है और वह हर वक़्त मुझे देखता है–

ان اللہ خبیر بمایصنعون

अल्लाह हमारे सारे आमाल से बाख़बर है और देख रहे हैं। उसे बदनज़री का भी इल्म है। मेरे करतूत की सज़ा देगा। इसलिए चाहिए कि अपने को पाक दामन और अ़फ़ीफ़ रखे।

बदनज़री से तौफ़ीक़ छिन जाती है—बदनिगाही से आदमी अपने आपको बचाए रखे तो अल्लाह दुनिया ही के अन्दर यह दौलत नसीब फ़रमाएंगे कि उसे ऐसी इबादत की तौफ़ीक़ हासिल होगी जिसकी लज़्ज़त और मिठास वह ख़ुद महसूस करेगा। अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता नज़रबाज़ी की बीमारी में मुब्तला हो गया तो कभी-कभी इबादत की तौफ़ीक़ भी छिन जाती है या कम-से-कम इबादत की मिठास और लज़्ज़त तो ख़त्म हो जाती है। अल्लाह सबको इससे बचाए। (आमीन)

हज़रत अक़दस शैख़ुल हदीस दाम मज्दुहू आप-बीती न० 6 में लिखते हैं कि 'यह निहायत ही हलाक कर देने वाला मर्ज़ है। एक तजुर्बा तो मेरा भी अपने बहुत से दोस्तों पर है कि ज़िक्र व शग़्ल की शुरूआत में लज़्ज़त व जोश पैदा होता है और इस जोश से इबादत में मिठास और लज़्ज़त पैदा होती है, मगर इस बदनज़री से सबसे पहले इबादत की मिठास और लज़्ज़त फ़ना होती है और इसके बाद धीरे-धीरे इबादतों के छूटने का ज़रिया भी बन जाती है।(पृ० 418)

बदनज़री ज़िना की पहली सीढ़ी है

हज़रत शैख़ुत्तफ़सीर मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी रह० ऊपर की आयतों के फ़ायदों के बारे में लिखते हैं कि—

बदनज़री ज़िना की पहली सीढ़ी है। इसी से बड़ी-बड़ी बेहयाई की बातों का दरवाज़ा खुलता है। क़ुरआन हकीम ने बदकारी और बेहयाई को दूर करने के लिए, एक तो उसी सुराख़ को बन्द करना चाहा है यानी मुसलमान मर्द व औरत को हुक्म दिया कि बदनज़री से बचें और अपनी ख़्वाहिशों को क़ाबू में रखें। अगर एक बार बेसाख़्ता मर्द की किसी अजनबी औरत पर या औरत की किसी अजनबी मर्द पर नज़र पड़ जाए तो दोबारा इरादे से उस पर नज़र न करे, क्योंकि यह दोबारा उसके अख़्तियार से होगा जिसमें वह माज़ूर नहीं समझा जा सकता। अगर आदमी नीची निगाह की आदत डाल ले, अख़्तियार व इरादे से नाजायज़ मामलों पर नज़र न करे तो बहुत जल्द उसके नफ़्स का तज़्किया हो सकता है। चूंकि पहली बार बेसाख़्ता नज़र पड़ती है, वह शहवत या नफ़्सानियत के रास्ते से नहीं होती, इसलिए हदीस में उसको माफ़ रखा गया है। शायद यहां भी *'मिन अब्सारिहिम'* में *'मिन'* *'तबइज़िया'* लेकर इस तरफ़ इशारा किया है कि आंख की चोरी और दिलों के भेद और नीयतों का हाल उसको सब मालूम है, इसलिए इसका ख़्याल रखते हुए बदनिगाही और हर क़िस्म की बदकारी से बचो, वरना वह अपने इल्म के मुवाफ़िक़ तुमको सज़ा देगा।' (फ़वाइदे उस्मानी)

وقل للمؤمنات يغضضن من ابصارهن (سورهٔ نور)

'और इसी तरह मुसलमान औरतों से कह दीजिए कि वे भी

अपनी निगाहें नीची रखें, यानी जिस उज़्व (अंग) की तरफ़ मुतलक़न देखना नाजायज़ है उसको असलन न देखे, और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करे, यानी नाजायज़ महल्ल में शहवत न पूरी करें, जिसमें ज़िना व इसहाक़ सब दाख़िल हैं।' (तफ़सीर ब्यानुल क़ुरआन, पृ० 695)

उतरने की वजह—क़ाज़ी सनाउल्लाह पानीपती रह० ने तफ़सीर मज़्हरी में इस आयत के उतरने की वजह लिखी है कि हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ि० ने फ़रमाया कि एक बार हज़रत अस्मा बिन्त मुर्सद रज़ि० अपने नख़्लिस्तान (खजूर के बाग़) में थीं, कुछ औरतें उनके पास आईं, जो इज़ार पहने हुए न थीं, इसलिए वे जो कुछ पांव में पहने हुए थीं, वह खुला नज़र आ रहा था। उनके सीने और गेसू भी खुले हुए थे। हज़रत अस्मा रज़ि० ने फ़रमाया, यह कैसी बुरी हैय्यत है? इस पर यह आयत उतरी। (तफ़सीरे मज़्हरी, पारा न० 18)

फ़ायदा—मर्दों और औरतों को इफ़्फ़त और पाक-दामनी हासिल करने के लिए बेहतरीन इलाज अपनी नज़रों को झुकाना है। यहां पर ख़ास तौर पर इस बुरे समाज और गन्दे माहौल में बेशर्मी, बेहयाई, इतनी आम है कि नज़रों को बचाना बहुत ही मुश्किल है। इससे बचने के लिए ज़ाहिरी अमली शक्ल तो वह है जो ऊपर की दो आयतों में इर्शाद फ़रमाई गई है कि चलते-फिरते अपनी निगाहों को पस्त रखें और दिल के अन्दर अल्लाह का ख़ौफ़ हो कि अल्लाह देख रहा है। उसको तुम्हारे कामों की ख़बर है। अल्लाह का ख़ौफ़ जितना ज़्यादा होगा, उतना ही हराम चीज़ों से बचना आसान होगा।

ज़िना के ज़रिए (साधन) भी हराम हैं—अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाते हैं कि *'ला तक़्रिबुज़्ज़िना'* कि ज़िना के क़रीब भी मत जाओ। अल्लाह का यह बड़ा एहसान है कि जो चीज़ क़तई हराम है,

उसके ज़रियों और साधनों से भी रोक दिया, क्योंकि क़ायदा यह है कि जब आदमी ज़रियों और वसीलों से परहेज़ करेगा, तो इन्शाअल्लाह ज़िना के क़रीब भी नहीं जाएगा। ज़िना के ज़रिए ये हैं—

1. बुरी नज़र से देखना,
2. उसकी तरफ़ चल कर जाना,
3. बे-ज़रूरत बात-चीत करना,
4. ग़ैर-महरमों की बातों की तरफ़ कान लगाना,
5. इस क़िस्म के नाजायज़ ख़्याल दिल में लाना।

ये सारी चीज़ें मना हैं और ज़िना के वसीले (ज़रिए) हैं।

ग़ैर-महरमों की बातें सुनना हराम है—औरतों के लिए ऊंची आवाज़ से बोलना हराम है, ताकि ग़ैर-महरमों तक उनकी आवाज़ न पहुंच जाए। उनका बदन जैसे सतर में दाख़िल है, आवाज़ भी सतर में दाख़िल है, इसलिए उनकी बातों को बे-ज़रूरत या शौक़िया सुनने से परहेज़ किया जाए।

औरतों के बाल—औरतों को इससे भी मना किया गया है कि अपने सर के बाल, जो टूट गए हों या निकल गए हों, उन्हें ऐसी जगह न डालें, जहां ग़ैर-महरम की नज़र पड़े। बल्कि अपने निकले हुए बाल किसी कपड़े या काग़ज़ में बांध कर ज़मीन में डाल दें या ऐसी जगह डालें जहां किसी ग़ैर-महरम की नज़र न पड़े।

औरत का जूठा—इमाम ग़ज़्ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि जिस बरतन में किसी औरत ने पानी पिया हो, तो जहां जिस औरत का होंठ लगा हो, वहां जान-बूझ कर पानी पीना जायज़ नहीं है और जिस चीज़ को बेवा औरत ने दांत से काट कर छोड़ दिया हो, उसे खाना न चाहिए। (कीमिया-ए-सआ़दत, पृ० 302, एडीशन नवल किशोर)

Maktabe Ashraf

बदनज़री फ़साद का बीज है—इमाम ग़ज़्ज़ाली रह० फ़रमाते हैं—

'ऐ अज़ीज़! जान तू कि मज्लिसों और दावतों में मर्दों और औरतों के बैठने और नज़ारा बाज़ी करने से बढ़ कर फ़साद का कोई बीज नहीं, बशर्तेकि उसमें परदा और हिजाब न हो और औरतें चादर और नक़ाब ओढ़ती हैं, यह काफ़ी नहीं। बल्कि जब औरतें सफ़ेद चादर ओढ़ती हैं और तकल्लुफ़ का नक़ाब डालती हैं तो और भी शहवत होती है और शायद चेहरा खुले रहने से ज़्यादा इस शर्म व हिजाब में अच्छी मालूम हों तो सफ़ेद चादर ओढ़ कर, पाकीज़ा नक़ाब डाल कर बाहर निकलना हराम है। जो औरत ऐसा करेगी, गुनाहगार होगी और बाप-भाई, शौहर, जो कोई हो और इस बात की औरत को इजाज़त दे, वह गुनाह में उसका शरीक होगा कि उसने इजाज़त दी।

(कीमिया-ए-सआदत, पृ० 302)

अजनबी मर्दों और औरतों से बर्ताव—इमाम ग़ज़्ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि किसी मर्द को दुरुस्त नहीं कि शहवत के इरादे से औरतों का पहना हुआ लिबास पहने, या बू सूंघने के वास्ते उस पर हाथ फेरे या हार-फूल या ऐसी कोई चीज़ जिससे लुत्फ़ मिले, औरतों को दे या ले या मीठी बातें करे और औरत को भी ग़ैर-मर्द के साथ बातें करना दुरुस्त नहीं, मगर सख़्त बात डांट के साथ। जैसा कि अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है—

ان التقيتن فلا تخضعن بالقول فيطمع الذى فى قلبه مرض وقلن قولا معروفا

यानी रसूल मक़बूल सल्ल० की पाक बीवियों (रज़ि०) को इर्शाद होता है कि अच्छी और नर्म आवाज़ के साथ मर्दों से बात न किया

करो, जिसके दिल में बीमारी है, वह तमअ् (लालच भरी उम्मीद) करेगा और भली बात कहा करो।' (कीमिया-ए-सआदत, पृ० 302)

सबका ख़ुलासा यह कि अल्लाह तआला ने ज़िना पर उभारने वाले जितने भी ज़रिए हैं, सभी से रोक दिया, ताकि आदमी साफ़-सुथरा, पाक-दामन और तक़वा वाला बनकर दुनिया व आख़िरत में कामयाबी हासिल करे।

يعلم خائنة الاعين وماتخفى الصدور (مؤمن)

आयत का तर्जुमा—*'अल्लाह तआला आंखों की ख़ियानत को जानते हैं और जिस चीज़ को सीने में छिपाते हैं, उसको भी जानते हैं।'*

फ़ायदा—हज़रते अक़दस थानवी रह० फ़रमाते हैं, अल्लाह तआला ने इस आयत में दो गुनाहों का ज़िक्र फ़रमाया है : आंखों के गुनाह और दिल के गुनाह। यों तो आंखों के बहुत से गुनाह हैं, लेकिन यहां एक ख़ास गुनाह का ज़िक्र है। वह क्या है—'बदनिगाही'। इसी तरह दिल के बहुत से गुनाह हैं, लेकिन यहां पर एक ख़ास गुनाह का ज़िक्र है यानी नीयत बुरी होना।

(दावते अ़ब्दियत, वाज़ ग़ज़्ज़ुलबसर, पृ० 6 मकतबा जामी)

गुनाह से दिल मैला होता है—इन दोनों गुनाहों को लोग गुनाह समझते हैं, लेकिन इसमें शक नहीं है कि जिस दर्जे की इनकी मग़्फ़िरत है, उस क़दर समझते नहीं। चुनांचे गुनाह का सबसे छोटा असर यह होना चाहिए कि दिल मैला हो जाएगा। मगर इस गुनाह के बाद दिल भी मैला नहीं होता। लोग बहुत हल्का समझते हैं। किसी औरत को देख लिया या किसी लड़के को घूर लिया, उसको

Maktabe Ashraf

ऐसा समझते हैं जैसे कि किसी अच्छे मकान को देख लिया या किसी फूल को देख लिया। (वही हवाला)

बदनिगाही से बूढ़े तक बचे हुए नहीं—हज़रत हकीमुल उम्मत थानवी रह० फ़रमाते हैं कि यह ऐसा गुनाह है इससे बूढ़े भी बचे हुए नहीं हैं। बदकारी से तो बहुत बचे हुए हैं, क्योंकि इसके लिए बहुत एहतिमाम करने पड़ते हैं। एक तो जिससे ऐसा काम करे, वह राज़ी हो और रुपया भी पास हो, साथ ही हया व शर्म भी रोक न हो, ग़रज़ इसके लिए शर्तें बहुत हैं, इसी तरह रुकावटें भी बहुत हैं। चुनांचे कहीं तो यह बात रुकावट बनती है अगर किसी को मालूम हो गया तो क्या होगा? किसी को ख़्याल होता है कि कोई बीमारी न लग जाए? किसी के पास रुपया नहीं होता किसी को इसकी वजह रुकावट बनती है, चूंकि रुकावटें ज़्यादा हैं इसलिए कोई शाइस्ता आदमी जो दीनदार समझे जाते हैं, इसमें बहुत कम मुब्तला होते हैं, इसके ख़िलाफ़ आंखों के गुनाह में इसमें सामान की ज़रूरत ही नहीं होती, क्योंकि न इसमें ज़रूरत रुपए की और न इसमें कोई बदनामी, क्योंकि इसकी ख़बर तो अल्लाह ही को है कि नीयत कैसी है?

(ग़ज़्ज़ुल बसर पृ० 7)

आंखों की गुनाहों का बड़ों को एहसास हो जाता है—बदनिगाही ऐसा मूज़ी मर्ज़ है कि इससे आंख का नूर जाता रहता है और अंधेरा छा जाता है। चुनांचे हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि० की ख़िदमत में एक आदमी आया और वह बुरी निगाह देखकर आया। हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि० ने ख़ास तौर पर ख़िताब में तो कुछ न फ़रमाया, लेकिन आम तौर पर फ़रमाया—

ما بال اقوام يترشح الزنا من اعينهم

यानी लोगों का क्या हाल है कि उनकी आंखों से ज़िना टपकता

है। यह उन्वान ऐसा है कि इसमें रुस्वाई कुछ नहीं है, लेकिन जो करने वाला है, वह समझ जाएगा कि मुझे फ़रमा रहे हैं।

(ऊपर वाला हवाला)

अह्ले कश्फ़ ने लिखा है कि बदनिगाही से आंखों में एक अंधेरा पैदा हो जाता है कि जिसको थोड़ी-सी बसीरत होगी, पहचान लेगा कि इस आदमी की निगाह पाक नहीं है। अगर दो आदमी ऐसे लिए जाएं कि उम्र में, हुस्न में और हर मामले में वे बराबर हों और फ़र्क़ उनमें सिर्फ़ इस क़दर हो कि एक फ़ाजिर हो और दूसरा मुत्तक़ी हो, जब चाहे देख लो, मुत्तक़ी की आंख में रौनक़ और नूर होगा और फ़ासिक़ की आंख में ज़ुलमत और बे-रौनक़ी होगी, लेकिन अह्ले कश्फ़ ख़ास तौर से किसी से कहते नहीं, बल्कि ऐब-पोशी करते हैं।

बदनिगाही की सज़ा क्यों ब्यान नहीं फ़रमाई गई?

आयत में गुनाह यानी अल्लाह तआला ख़ियानत करने वाली आंखों को तो जानता है और जो बातें दिलों में छिपी हैं, उनको भी जानता है, इस गुनाह का तो ज़िक्र फ़रमाया, मगर अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने उसकी सज़ा माफ़ नहीं फ़रमाई, जबकि दूसरे गुनाहों के मामले में उसकी सज़ा साफ़-साफ़ ब्यान फ़रमा दी है। इसमें एक नुक्ता है, वह यह कि लोगों की आम तबियतें अलग-अलग हैं। कुछ तबियतें ऐसी हैं कि उनके लिए सज़ा ब्यान करना लाज़मी है, तभी वे गुनाहों से बाज़ आते हैं। ये वे लोग हैं जो बेशर्म व बेहया लोग होते हैं। जूतों से डरते हैं और बग़ैर जूतियों के, चाहे किसी को ख़बर हो जाए उनको कुछ ख़ौफ़ नहीं। और कुछ तबियतें ऐसी होती हैं कि सज़ा की अगर उन्हें ख़बर हो जाए तो रुकावट कम होती है, मगर

इससे वे गड़ जाते हैं और शर्मिन्दा हो जाते हैं कि फ़्लां को ख़बर हो जाएगी, ख़ास तौर से जब यह मालूम हो जाए कि हमारा यह जुर्म माफ़ भी हो जाएगा और भी ज़्यादा पसीना-पसीना हो जाते हैं, क्या ख़ूब कहा है—

इधर से ऐसे गुनाह पैहम, उधर से यह दम-ब-दम इनायत

(दावते अ़ब्दियत व ग़ज़्ज़ुल बसर, पृ० 8)

ग़रज़ यह कि दो क़िस्म के लोग होते हैं—एक तो वे जो सज़ा का नाम सुनकर रुकते हैं, एक वे जो सिर्फ़ इत्तिला की ख़बर देने से शरमाते हैं और इस काम के क़रीब नहीं जाते, जो बेहया थे, वे तो यों रुके कि *'यालमु'* में इशारा सज़ा की तरफ़ भी है। चुनांचे तफ़सीर लिखने वाले ऐसे मक़ाम पर *'फ़-युजाज़ु बिकुम बिही'* से तफ़सीर करते हैं। यानी इस गुनाह पर वह सज़ा देगा। दूसरी तबियत के लोग इसलिए रुकते हैं कि मारे शर्म के गड़ गए हैं कि अल्लाहु तआ़ला सब जानते हैं। बहरहाल दोनों क़िस्म के लोगों को इस आयत में वईद और धमकी है कि आंखों की ख़ियानत से और दिलों की बुरी नीयतों से अपने आपको बचा ले। (ऊपर का हवाला, पृ० 9)

दिल के गुनाह

'वमा तुख़्फ़िस्सुदूर' यानी जिसे सीने में वे लोग छिपाते हैं। अल्लाह तआ़ला इसको भी जानते हैं कि हज़रते अक़दस थानवी साहब रह० फ़रमाते हैं कि यह दिल का गुनाह पहले से ज़्यादा शदीद है, यानी मासियत सिर्फ़ निगाह ही से नहीं, बल्कि दिल से भी होती है। बहुत से लोग दिल से सोचा करते हैं और औरतों और मर्दों का ख़्याल करते हैं और ख़्याल से मज़े लेते हैं और यों समझते हैं कि हम

Maktabe Ashraf

मुत्तक़ी हैं। ख़ूब समझ लो कि यह शैतान का धोखा है।

(ऊपर का हवाला)

दिल का गुनाह सख़्त होता है

कभी-कभी दिल के अन्दर सोचने से और दिल के अन्दर बातें करने से और ज़्यादा फ़ित्ना होता है, क्योंकि निगाह करने में कभी-कभी बुरा और बद-सूरत साबित होता है और दिल के अन्दर बातें करते हैं तो तबियत को ज़्यादा लगाव हो जाता है और दिल से वह बात किसी तरह नहीं निकलती, बल्कि सिर्फ़ निगाह न करने से अपने को मुजाहदे वाला समझकर अपने को ज़्यादा क़रीबी समझता है और यह नहीं देखता, दिल में मज़े ले रहा है, तो मुजाहदा कहां रहा? (वही हवाला)

कभी-कभी ख़ुद दिल ही से गुनाह हो जाता है। हो जाते वक़्त आंख-कान का वास्ता नहीं होता। जैसे पहले देखी हुई सूरतें याद आती रहती हैं और उनसे मज़ा लेता है तो दिल का गुनाह आंखों के गुनाह से और एक वजह से भी ज़्यादा शदीद है और आंखों से देखने में एक फ़र्क़ और भी है, यानी आंखों के गुनाह में तो नफ़्से फ़े'ल (असल काम) को कोई भी नहीं देख सकता। इसकी ख़बर सिवा अल्लाह के किसी को नहीं, इसलिए इनसे वही बचेगा जिसके दिल के अन्दर तक़्वा हो। (ऊपर ही का हवाला)

कान की हिफ़ाज़त—और चूंकि क़ल्ब के अन्दर कानों के वास्ते से भी बातें इस क़िस्म की पहुंचती हैं। इसलिए जिस तरह आंखों की हिफ़ाज़त ज़रूरी है, कानों की भी निगहदाश्त ज़रूरी है कि ऐसे क़िस्से और हिकायतें न सुने, न ऐसे मक़ाम पर जाए जहां गाना-बजाना हो रहा हो। (ऊपर का हवाला)

Maktabe Ashraf

हुस्नपसन्दी का धोखा—कुछ लोग कहते हैं कि हम अल्लाह की नेमतों में, अच्छी सूरतों में इबरत पकड़ते हैं और उसको नेकी और कमाल का ज़रिया समझते हैं। यह सिर्फ़ धोखा और शैतानी तलबीस है। अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी रह० अपनी किताब **'तलबीसे इब्लीस'** में लिखते हैं कि इब्ने अ़क़ील ने कहा कि जो आदमी यों कहता है कि मुझको अच्छी सूरतों के देखने से कुछ ख़ौफ़ नहीं, तो उसका यह क़ौल बे-बुनियाद है, क्योंकि शरीअ़त का ख़िताब हर एक के लिए आम है, किसी को मुम्ताज़ नहीं कहा जा सकता। क़ुरआन शरीफ़ की आयतें ऐसे दावों का इंकार करती हैं। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया—

قل للمومنين يغضوا من ابصارهم

यानी *'ऐ रसूल! इन ईमान वालों से कह दीजिए कि अपनी आंखें नीची रखा करें।'* और फ़रमाया—

افلا ينظرون الى الابل كيف خلقت الخ

यानी क्या ऊंट को नहीं देखते कि किस सूरत पर पैदा किया और आसमान की तरफ़ निगाह नहीं उठाते कि किस तरह बुलन्द किया गया और पहाड़ों पर नज़र नहीं करते कि क्योंकर गाड़े गए, पस उन्हीं सूरतों का देखना जायज़ हुआ, जिनकी तरफ़ नफ़्स को कुछ रग़बत नहीं और जिनमें नफ़्सानी ख़्वाहिश का कुछ हिस्सा नहीं, बल्कि यह वह इबरत है जिसमें ज़रा-भी शहवत की आमेज़श (मिलावट) और लज़्ज़त का मिलाव नहीं। (तलबीसे इब्लीस, पृ० 8)

Maktabe Ashraf

बाब-2

वे हदीसें, जिनमें बदनज़री से मना किया गया

अचानक नज़र

(हदीस न० 1)

عن جرير ﷺ قال سالت رسول الله ﷺ عن نظر الفجائة فقال فامرني ان اصرف بصرك (رواه مسلم و ابوداؤد)

हज़रत जरीर रज़ि० ने हुज़ूरे अकरम सल्ल० से अचानक निगाह के बारे में पूछा, तो आपने फ़रमाया कि अपनी निगाह को फ़ौरन हटा लो। (मुस्लिम, अबू-दाऊद, तिर्मिज़ी, तर्ग़ीब व तर्हीब, पृ० 36)

फ़ायदा—एक हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नामहरम, जिसमें मर्द भी दाख़िल हैं, की तरफ़ निगाह करने को आंख का ज़िना फ़रमाया है। (मिश्कात, पृ० 12)

दूसरी जगह इर्शाद है कि नज़र को नज़र के पीछे न लगाओ कि मक़सद यह है कि अगर इत्तिफ़ाक़ से नज़र पड़ जाए जो बे-इरादा हो, तो माफ़ है, लेकिन दोबारा उसकी तरफ़ देखना या निगाह को जमाए रखना मासियत में दाख़िल है। (आप-बीती न० 2, पृ० 415)

Maktabe Ashraf

रास्तों का हक़

(हदीस न० 2)

عن ابی سعید الخدری ﷺ عن النبی ﷺ قال ایاکم والجلوس بالطرقات فقالوا یا رسول الله مالنا من مجالسنا بد نتخذت فیها قال فاذا ابیتم الا المجالس فاعطوا الطریق حقه قالوا و ما حق الطریق یا رسول الله قال غض البصر وکف الاذی و ردالسلام والامر بالمعروف والنهی عن المنکر

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि रास्तों पर बैठने से बचो। लोगों ने कहा, रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! काम-काज के लिए तो वह ज़रूरी है। आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि अच्छा तो रास्तों के हक़ अदा करते रहो। उन्होंने अ़र्ज़ किया, वे क्या हैं? आपने इर्शाद फ़रमाया; वे ये हैं, निगाहें नीची रखना, किसी को तकलीफ़ न देना, सलाम का जवाब देना, अच्छी बातों की तालीम करना और नाजायज़ बातों से रोकना।

(बुख़ारी, मुस्लिम, मिश्कात, पृ० 398)

छः चीज़ों पर जन्नत की ज़मानत

(हदीस न० 3)

عن عباده بن الصامت ﷺ ان النبی ﷺ قال اضمنوا لی ستا عن انفسکم اضمن لکم الجنة اصدقوا اذا حدثتم واوفو اذا و عدتم واد والامانة اذا ائتمنتم واحفظوا فروجکم وغضوا ابصارکم و کفوا ایدیکم" رواه احمد و

ابن حبان فی صحیحہ والحاکم کلھم من روایۃ المطلب بن عبداللہ بن حنطب عنہ والحاکم صحیح الاسناد والترغیب والترھیب۔

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इर्शाद फ़रमाते हैं कि छः चीज़ों के तुम ज़मानत देने वाले बन जाओ, मैं तुम्हारे लिए जन्नत की ज़मानत देने वाला बन जाता हूं—

1. बात करते वक़्त झूठ न बोलो,
2. अमानत में ख़ियानत न करो,
3. वायदा-ख़िलाफ़ी न करो,
4. नज़र नीची रखो,
5. हाथों को ज़ुल्म से बचाए रखो और
6. अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त रखो।

(अहमद, इब्ने हिब्बान, हाकिम, तर्ग़ीब व तर्हीब)

निगाह इब्लीस का ज़हरीला तीर है

(हदीस नं० 4)

عن عبداللہ بن مسعود قال رسول اللہ ﷺ عن ربہ عزوجل النظرۃ سھم مسموم من سھام ابلیس من ترکھا من مخافتی ابدلتہ ایمانا یجد حلاوتہ فی قلبہ

رواہ الطبرانی والحاکم من حدیث حذیفۃ۔

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है कि निगाह इब्लीस के ज़हरीले तीरों में से एक तीर है। जो आदमी उससे अल्लाह के ख़ौफ़ की वजह से बचा रहे, अल्लाह तआ़ला उसको ऐसा ईमानी नूर नसीब फ़रमाते हैं, जिसकी मिठास और लज़्ज़त वह क़ल्ब में महसूस करता है। (तबरानी, हाकिम)

Maktabe Ashraf

फ़ायदा—नज़र भी इब्लीस के तीरों में से एक तीर है, यानी इंसान को धोखा देने और ख़िलाफ़े राह अख़्तियार करने के लिए शैतान जो हरबे इस्तेमाल करता है, उनमें से एक कामयाब हरबा निगाह का तीर है कि आदमी पहले देखता है, फिर देखने के बाद वस्वसे पैदा होते हैं। बुरे काम के लिए राह हमवार करता है, यहां तक कि उसमें मुब्तला हो जाता है, पस ज़िना से बचना भी ज़रूरी है और निगाह नीची रखना भी ज़रूरी है।

निगाह की हिफ़ाजत से इबादत में मिठास

(हदीस नं० 5)

عن ابی امامة ﷺ قال مامن مسلم ينظر الى محاسن امراءة ثم يغض بصرة الاحدث الله له عباد يجد حلاوتها فی قلبه۔ (رواه الطبرانی واحمد)

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जिसकी नज़र किसी औरत के हुस्न व जमाल पर पड़ जाए, फिर वह अपनी निगाह हटा ले, तो अल्लाह तआ़ला उसके बदले में एक ऐसी इबादत उसे अ़ता फ़रमाते हैं, जिसकी लज़्ज़त वह अपने दिल में पाता है। (अहमद, तबरानी)

नज़रबाज़ी पर कड़ी धमकी

(हदीस न० 6)

عن ابی امامة ﷺ عن النبی ﷺ قال لتغضن ابصاركم او لتحفظن فروجكم اوليكسفن الله وجوهكم۔

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है कि या

Maktaba Ashraf

तो तुम अपनी निगाह नीची रखोगे और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करोगे या अल्लाह तआ़ला तुम्हारी शक्लें बदल देगा।

(तबरानी, तर्ग़ीब, तर्हीब, पृ० 37)

फ़ायदा—इस हदीस पाक में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इतनी कड़ी धमकी फ़रमाई है। हालांकि हम इस गुनाह को बहुत ही मामूली समझते हैं, इसकी कोई परवाह नहीं होती। यह एक ऐसा मुहलिक मर्ज़ है कि जिससे इंसान बचता नहीं है, दूसरे गुनाहों के ख़िलाफ़ कि उनसे सैरी हो जाती है और आदमी छोड़ देता है और बदनिगाही ऐसा मर्ज़ है कि उससे सैरी नहीं होती। जब होती है तो और ज़्यादा तक़ाज़ा होता है और देखो! आदमी खाना खाता है, तो सैर हो जाता है; पानी पीता है, प्यास बुझ जाती है। मगर बदनज़री ऐसी बला है कि इससे सैरी नहीं होती है। इस ख़ास हैसियत से यह तमाम गुनाहों से बढ़ कर है।(दावाते अ़ब्दियत, वाज़ ग़ज़्जुल बसर, पृ० 10)

बदनज़री कबीरा गुनाह—हज़रते अक़दस थानवी रहमतुल्लाह अ़लैह ने इर्शाद फ़रमाया है कि बदनिगाही हर पहलू से हराम और कबीरा गुनाह है। (वाज़ ग़ज़्जुल बसर, पृ० 18)

एक जगह इर्शाद फ़रमाते हैं कि मैं देखता हूं कि शायद हज़ार में से एक इससे बचा हो, वरना आम तौर पर लोग इसमें मुब्तला हैं।

(वाज़ ग़ज़्जुल बसर, पृ० 9)

इससे आदमी यह ख़्याल न करे कि जब आम लोग इसमें मुब्तला हैं तो एक और भी सही, बल्कि नज़रबन्दी से बचने का एहतिमाम करे। इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि मासियत जब आम हो जाती है तो उसमें सभी को शामिल होना पड़ता है, तो यह तेरे नफ़्स का

Maktabe Ashraf

धोखा है। तू ही बता, अगर कहीं से सैलाब आ गया हो, जिसमें सब ही बहते जा रहे हों, तो अगर कोई आदमी तैरना जानता है या और किसी तरीक़े से बच सकता है, तो क्या यह समझ कर चुप हो जाए कि इस मुसीबत में सभी गिरफ़्तार हैं। हालांकि सैलाब की मुसीबत बहुत थोड़ी देर की है। ज़्यादा-से-ज़्यादा यह कि मौत आ जाएगी, इससे ज़्यादा तो कुछ न हुआ। और आख़िरत का अज़ाब बहुत सख़्त है, कभी ख़त्म होने वाला नहीं है। इस बात को अच्छी तरह समझ लेना और हमेशा ग़ौर करते रहना चाहिए। (तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)

घूरने वाले मर्द और घूरने वाली औरत

(हदीस न० 7)

عن الحسن مرسلا قال بلغنى ان رسول الله ﷺ قال لعن الله الناظر والمنظور اليه

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि **'ल-अ़-नल्लाहुन्नाज़िरु वल मंज़ूरि इलैह'** यानी अल्लाह तआ़ला लानत करते हैं, घूरने वाले मर्द और घूरने वाली औरत पर।

(बैहक़ी, शौबल ईमान, मिश्कात शरीफ़, पृ० 270)

फ़ायदा—हदीस पाक में अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने देखने वाले और जिन पर नज़र की जा रही है यानी औरतों पर लानत फ़रमाई है, अगर उनकी तरफ़ से बे-हिजाबी और बदनज़री के अस्बाब हों। लानत का मतलब है रहमत से दूर करना। भला जिसको अल्लाह अपनी रहमत से दूर करें, उसका कहां ठिकाना?

Maktabe Ashraf

आंखें भी ज़िना करती हैं

(हदीस न० 8)

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इर्शाद फ़रमाते हैं–

العينان تزنيان وزناهما النظر والاذنان تزنيان وزناهما الاستماع
واللسان يزنى وزناه النطق واليدان تزنيان وزناهما البطش (الحديث)

आंखें ज़िना करती हैं; और उनका ज़िना देखना है। और कान ज़िना करते हैं; और उनका ज़िना सुनना है। और ज़ुबान भी ज़िना करती है, और उसका ज़िना बोलना है। और हाथ भी ज़िना करते हैं; और उनका ज़िना ग़ैर-महरम को पकड़ना है। (ऊपर का हवाला)

फ़ायदा—हदीस पाक से मालूम हुआ कि बदनिगाही भी आंखों का ज़िना है। इसलिए बहुत ही एहतमाम और फ़िक्र से, मुहल्ले, मज्मों, बाज़ार, सभी जगहों में अपनी निगाहों को बचाते हुए चलना चाहिए।

Maktabe Ashraf

अल्लाह तआ़ला की ग़ैरत

(हदीस न० 9)

انا غيور والله اغير منى ومن غيرته حرم الفواحش ماظهر منها ومابطن

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इर्शाद फ़रमाते हैं कि मैं ग़ैरतमंद हूं और अल्लाह जल्ल ल शानुहू मुझसे भी ज़्यादा ग़ैरत वाले हैं और ग़ैरत ही की वजह से अल्लाह ने ज़ाहिरी और बातिनी फ़वाहिश को हराम कर दिया है। (ऊपर का हवाला)

फ़ायदा—मालूम हुआ कि यह गुनाह अल्लाह को बहुत नापसन्द है। जो उसका इर्तिकाब करता है, अल्लाह जल्ल ल शानुहू को ग़ैरत आती है, अपने दरबारे आली से उसको मलऊन कर देते हैं, अपनी रहमत से दूर कर देते हैं। तो अगर अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत का दावा है, रसूल अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुहब्बत का दावा है, तो ग़ैरुल्लाह की तरफ़ नज़र नहीं करनी चाहिए। जब आदमी तक़्वा अख़्तियार करता है, ज़ाहिरी-बातिनी गुनाहों से बचता है, तो उसे अल्लाह की मुहब्बत और अल्लाह की मईय्यत हासिल होती है। *'इन्नल्ला-ह युहिब्बुल मुत्तक़ीन'* अल्लाह जल्ल ल शानुहू परहेज़गारों को महबूब रखते हैं। *'वअ़्लमू अन्नल्ला-ह मअल मुत्तक़ीन०'* और जान लो अल्लाह जल्ल ल शानुहू मुत्तक़ियों के साथ हैं। ग़ौर फ़रमाइए अल्लाह जल्ल ल शानुहू की तरफ़ से दुनिया ही में कितनी दौलतें मिलती हैं कि अल्लाह उसे महबूब रखते हैं। अल्लाह की मईय्यत उसे हासिल होती है। अल्लाह जल्ल ल शानुहू अपने फ़ज़्ल व करम से उस मूज़ी मर्ज़ से हम सबको बचाए रखे।

वे आंखें, जो क़ियामत के दिन नहीं रोएंगी

(हदीस न०10)

روی عن ابی هریره ﷺ قال قال رسول الله ﷺ کل عین باکیة یوم القیامة الاعین غضب عن محارم الله وعین سهرت فی سبیل الله وعین خرج منها مثل رأس الذباب من خشیة الله

रसूल अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि हर आंख क़ियामत के दिन नहीं रोएगी, मगर वह आंख जो अल्लाह की

हराम की हुई चीज़ों के देखने से बन्द रहे और वह आंख जो अल्लाह की राह में जागती रहे और वह आंख जो अल्लाह के ख़ौफ़ से रोए, गो उसमें आंसू सिर्फ़ मक्खी के सुरमे के बराबर ही निकला हो।

(इस्बहानी, अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब, पृ० 34)

अमरद को देखना भी मना है

(हदीस न० 11)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने मना फ़रमाया कि आदमी किसी अमरद लड़के को नज़र जमा कर देखे। —तल्बीसे इब्लीस, पृ० 346

एक और रिवायत हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत की गई है कि रसूल अकरम सल्ल० ने फ़रमाया कि तुम शाहज़ादों के साथ न बैठो, क्योंकि उनका फ़ित्ना दोशीज़ा लड़कियों के फ़ित्ने से भी ज़्यादा है।

(ऊपर का हवाला)

फ़ायदा—एक हदीस में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है कि नामहरम औरतों के पास आमद व रफ़्त रखने से बचा करो। एक आदमी ने अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! देवर के हक़ में आप क्या फ़रमाते हैं? आपने फ़रमाया : "देवर तो पूरी मौत है"। मौत इसलिए इर्शाद फ़रमाया कि देवर हर वक़्त घर में रहता है। अगर ख़ुदा-न-ख़्वास्ता आंख लड़ गई, तो इससे जैसे नतीजे पैदा होंगे, ज़ाहिर है। (आप-बीती न० 6)

Maktabe Ashraf

बाब-3

बदनज़री के नुक़सान

(यह बाब हक़ीक़त में पहले दो बाबों की तकमील है।)

बदनिगाही को लोग हल्का समझते हैं—बदनिगाही अगरचे बहुत बड़ा गुनाह है, मगर चूंकि अकसर लोग इसको हल्का समझते हैं, इसलिए बे-धड़क उसको करते रहते हैं। ज़िना,चोरी वग़ैरह जो गुनाह के काम हैं, उनमें क़ुव्वत व ताक़त की ज़रूरत है, इसके ख़िलाफ़ बदनिगाही में क़ुव्वत व ताक़त की ज़रूरत नहीं। इस वास्ते यह मर्ज़ जाता भी नहीं, यहां तक कि बूढ़े भी इसमें मुब्तला हैं। हज़रत थानवी रह० फ़रमाते हैं कि मुझसे एक बूढ़े आदमी मिले। बहुत से कामों में वह मुत्तक़ी थे, मगर उन्होंने अपनी हालत ब्यान की कि मैं लड़कों को बुरी नज़र से देखने में मुब्तला हूं। एक और बूढ़े मिले, वह औरत को घूरने में मुब्तला थे और यह मर्ज़ शुरू जवानी में पैदा होता है, बल्कि सब गुनाहों की यही शान है कि शुरू जवानी में तक़ाज़े की वजह से किया जाता है, फिर वह मर्ज़ और रोग लग जाता है और मरने तक नहीं जाता। (ग़ज़्जुल बसर, पृ० 8)

बदनिगाही का कितना बड़ा नुक़सान है कि जब मुब्तला हो जाता है, फिर वह उससे छूटता नहीं। आदमी बूढ़ा हो जाए, क़ब्र के किनारे तक पहुंच जाए, हिम्मत ख़त्म हो जाए, मगर यह मूज़ी और मुह्लिक मर्ज़ साथ लगा रहे।

शर्मगाह से ज़्यादा नज़र की हिफ़ाज़त ज़रूरी है

हाफ़िज़ इब्ने क़ैय्यिम रह० ने 'अल-जवाबुल काफ़ी' पृ० 204 में बहुत तफ़सील से इस पर बहस की है। वह फ़रमाते हैं कि हादसों की शुरूआत नज़र से हुई है। जैसा कि आग के शोलों की शुरूआत एक चिंगारी से होती है। इसलिए शर्मगाह से ज़्यादा नज़र की हिफ़ाज़त ज़रूरी है। इसलिए कि शुरूआत तो नज़र से हुई है, इसके बाद ख़्याल जमना शुरू होता है, फिर उधर क़दम उठते हैं और इसके बाद मुब्तला हो जाता है। (आपबीती, न० 6, पृ० 415)

इसीलिए कहा गया है कि जो इन चार चीज़ों की हिफ़ाज़त करे, तो अपने दीन की हिफ़ाज़त कर लेता है : नज़र, फिर दिल का ख़्याल, फिर बात-चीत, फिर क़दम, आदमी को चाहिए कि इन चारों ही चीज़ों से बचने के लिए कोशिश करे कि इन्हीं दरवाज़ों से दुश्मन शैतान घरों में घुसता है और फिर घर की बरबादी और हलाकत का ज़रिया बनता है।

इसके बाद हाफ़िज़ इब्ने क़ैय्यिम रह० ने इन चारों पर तफ़सीली बहस की है। सबसे पहले नज़र से शुरूआत की है कि इससे हिफ़ाज़त शर्मगाह की हिफ़ाज़त का असल ज़रिया है कि जो अपनी नज़र को आज़ाद छोड़ दे, उसे हलाकत के मौक़ों में पहुंचा देती है।

बदनज़री ज़ख़्म को ज़्यादा गहरा करती है—हाफ़िज़ इब्ने क़ैय्यिम रह० फ़रमाते हैं कि निगाह का तीर जिसकी तरफ़ फेंका जाए, इससे पहले तीर फेंकने वाले को ही क़त्ल करता है कि निगाह डालने वाला दूसरी निगाह को अपने ज़ख़्म का इलाज समझता है, हालांकि वह ज़ख़्म को ज़्यादा गहरा करता है।

(ऊपर का हवाला, पृ० 417)

Maktabe Ashraf

बदनिगाही से कभी जी नहीं भरता—एक नुक़सान तो यह है कि इस गुनाह के हो जाने के बाद आंखों पर अंधेरा छा जाता है; आंखें बे-नूर हो जाती हैं और दिल पर परेशानी छा जाती है। और एक नुक़सान यह है कि यह गुनाह चाहे कितना ही ज़्यादा किया जाए और चाहे हज़ारों अमरदों और औरतों को घूरा जाए और घंटों घूरा जाए, जी नहीं भरता। नतीजा *'ल-अ़-नल्लाहुन्नाज़ि-र वल मंज़ूर इलैह'* का मिस्दाक़ बनकर रह जाता है और अल्लाह तआ़ला की लानत का मुस्तहिक़ हो जाता है और यह कितना बड़ा नुक़सान है कि इस गुनाह के करने के ज़माने में अल्लाह की रहमत से दूर रहे।

बदनज़री से इबादत का मज़ा जाता रहता है—एक नुक़सान यह भी है कि इस मर्ज़ के बाद इबादत की मिठास ख़त्म हो जाती है। इबादत बे-लज़्ज़त बन जाती है।

हदीस पाक में भी यही मज़्मून आया है। हुज़ूर अकरम सल्ल० का इर्शाद है कि जिसकी नज़र किसी औरत के हुस्न व जमाल पर पड़ जाए, फिर वह अपनी निगाह हटा ले तो अल्लाह तआ़ला उसके बदले एक ऐसी इबादत उसे अता फ़रमाते हैं जिसकी लज़्ज़त वह अपने दिल में पाता है। मालूम हुआ कि निगाह हटा लेने में इबादत की लज़्ज़त मालूम होती है और इसके ख़िलाफ़ करने में इबादत की मिठास और लज़्ज़त ख़त्म हो जाती है और यह हदीस पहले गुज़र चुकी है कि अल्लाह जल्ल ल शानुहू ग़ैरतमंद हैं। अल्लाह की ग़ैरत यह गवारा नहीं करती कि उसका दिल उसके ग़ैर से लज़्ज़त हासिल करने के बाद अल्लाह की इबादत से लज़्ज़त हासिल करे। अल्लाह तआ़ला हमें महफ़ूज़ रखें।

सूरतें बदल देंगे—एक नुक़सान यह भी है कि इस गुनाह के

Maktabe Ashraf

करने पर सख़्त वईद (धमकी) आई है कि अल्लाह इसकी वजह से शक्लें बदल देंगे, जैसा कि तबरानी की रिवायत पहले गुज़र चुकी है। अल्लाह ही अपने ग़ज़ब से पनाह में रखे। (आमीन)

हर तरह की बदनिगाही से बचा जाए—बदनिगाही चूंकि निहायत ही मुहलिक मर्ज़ है, इसलिए इसकी सारी ही क़िस्मों से परहेज़ करना चाहिए। एक क़िस्म औरतों की तरफ़ घूरना है कि उसके देखने से अपनी निगाहों को महफ़ूज़ रखे; एक क़िस्म अमरद (यानी जिन लड़कों की अभी दाढ़ी न निकली हो) के इख़्तिलात (घुलने-मिलने) से परहेज़ किया जाए। एक बुज़ुर्ग का ख़ास अमरदों के हक़ में क़ौल है कि अल्लाह तआला जिसको अपनी बारगाह में मरदूद करना चाहते हैं, उसको लड़कों की मुहब्बत में मुब्तला कर देते हैं।

हज़रत अक़दस थानवी नव्वरल्लाहु मर्क़दहू फ़रमाते हैं कि एक धोखा और होता है और यह कि कुछ कहते हैं कि जैसे अपने बेटे को देखकर जी चाहता है कि गले लगा लूं, उसी तरह दूसरे के बच्चे को देखकर हमारा यही जी चाहता है।

साहिबो! खुली हुई बात है कि अपने सयाने बच्चे और दूसरे के सयाने बच्चे में बड़ा फ़र्क़ है। अपने लड़के को गले लगाना, चिमटाना और तरह का है। इसमें शहवत की मिलावट हरगिज़ नहीं और दूसरे के लड़के की तरफ़ और किस्म का मैलान (झुकाव) है कि उसे गले लगाने से भी आगे बढ़ने को कुछ का दिल चाहता है। महबूब की जुदाई में और तरह का रंज होता है और लड़के की जुदाई में और तरह का। इस तरह के लड़के की मुहब्बत तो और भी क़ातिल ज़हर है। नुसूस (क़ुरआन व हदीस) में तो इसकी हुर्मत है।

Maktabe Ashraf

दो वाक़िए—इमाम इब्ने जौज़ी ने अपनी किताब 'तलबीसे इब्लीस' में लिखते हैं कि अबू अब्दुल्लाह इब्न अजला कहते हैं कि मैं खड़ा हुआ एक ख़ूबसूरत नसरानी लड़के की तरफ़ देख रहा था, इतने में अब्दुल्लाह बलख़ी रह० मेरे सामने से गुज़रे। पूछाः कैसे खड़े हो? मैंने कहा, ऐ चचा! आप इस शक्ल को देखते हो कि क्योंकर दोज़ख़ के आग में अज़ाब दिया जाएगा। उन्होंने अपने दोनों हाथ मेरे कंधों के बीच में मारे और कहा कि इसका नतीजा तुझको मिलेगा, चाहे कुछ मुद्दत ही क्यों न गुज़र जाए। मैंने चालीस वर्ष के बाद उसका नतीजा पा लिया कि क़ुरआन शरीफ़ मुझको याद न रहा।

(तलबीसे इब्लीस, पृ० 349)

अबुल अदयान कहते हैं कि मैं अपने उस्ताद अबूबक्र दक़्क़ाक़ रह० के साथ था कि एक नौजवान लड़का सामने आया। मैं उसको देखने लगा। उस्ताद ने मेरी यह हरकत देखकर फ़रमाया, बेटा! कुछ दिनों के बाद तुम इसका नतीजा पाओगे। मैं बीस वर्ष तक इन्तिज़ार में रहा, लेकिन नतीजा न देख सका। एक रात इसी सोच-विचार में सो रहा था, जब सुबह उठा तो तमाम क़ुरआन भूल गया।

(वही हवाला)

तस्वीर देखना—बदनज़री की एक क़िस्म वे नंगी तस्वीरें हैं, जो अख़बारों और किताबों में होती हैं, उनसे भी अपनी निगाह को बचाया जाए। साथ ही सिनेमा, टेलीविज़न पर जो तस्वीरें आती हैं, उनसे भी परहेज़ किया जाए। ये सारी चीज़ें फ़हश बातों में से हैं। जिनसे हमें मना किया गया है।

टेलीविज़न की मुसीबत—यह टेलीविज़न जो इंग्लैंड में लगभग तमाम ही मुसलमान घरानों में है। शायद ही किसी दीनदार आदमी

Maktabe Ashraf

का घर बचा हुआ हो। अलावा उनके कि जो लोग दीनदार हैं और दीनी ज़ेहन के हैं, वे टेलीविज़न को अपनी औलाद के लिए और ख़ुद अपने लिए मुहलिक और नुक़सानदेह समझते हैं। उनके घर टेलीविज़न से ख़ाली हैं, वरना अकसरीयत उन्हीं की है जो अपने क़ीमती वक़्त को गुज़ारने का मश्ग़ला टेलीविज़न ही को तज्वीज़ करते हैं। आम तौर पर टेलीविज़न देखने में मांएं, बहनें, बेटियां, मर्द, औरत सभी शमिल हैं। टेलीविज़न पर आने वाली फ़ह्श तस्वीरों को देखते रहते हैं, ऐसी हालत में शर्म व हया, अदब व लिहाज़ जो हमारे समाज के अहम अरकान हैं, कहां बाक़ी रह सकते हैं?

टेलीविज़न के नुक़सान

टेलीविज़न से फ़ायदा तो दूर की बात, ज़ाहिरी और बातिनी हर तरह के नुक़सान ही नुक़सान हैं। ज़ाहिरी नुक़सान तो यह है कि आंखों के लिए सख़्त नुक़सानदेह है। मग़्रिबी क़ौमों के फ़लसफ़ी और तब्सरा करने वालों का कहना है कि टेलीविज़न मज्मूई हैसियत से बहुत ज़्यादा नुक़सानदेह है। अमेरिकी तब्सरा करने वालों की राय है कि अमरीकी लड़के-लड़कियां और नौजवान टेलीविज़न पर मार-धाड़ के क़िस्से और मंज़रों को देखकर रोज़ाना की ज़िंदगी में हक़ीक़त में, इन बातों को कर गुज़रते हैं। अकसर बैंकों में जो डाके पड़ते हैं, उनके तौर-तरीक़े टेलीविज़न और सिनेमा की फ़िल्मों के देखने और सुनने से है। यह ख़राबी मग़्रिबी और मश्रिक़ी मुल्कों में भी आए दिन जो जुर्मों के वाक़िए जैसे चोरी, जेब-तराशी, नक़्बज़नी और औरतों पर मुज्रिमाना हमले होते हैं, वे नौजवानों ने टेलीविज़न और सिनेमा से सीखे हैं। नौजवानों ने ख़ुद अदालती तह्क़ीक़ात में इसका इक़रार

किया है कि हमें ये चीज़ें टेलीविज़न पर अमली तौर पर देखकर ख़ुद करने का शौक़ पैदा हुआ।

डॉक्टरी के मग़िरबी माहिरों ही की यह भी दरयाफ़्त (खोज) है कि घंटों रोज़ाना टेलीविज़न देखने से आंखों को सख़्त नुक़सान पहुंचता है और जिस्म को नुक़सान पहुंचता है।

नंगी तस्वीरें—आंख के ग़लत इस्तेमाल में से नंगी तस्वीरों का देखना भी है, जिनका मक़सद ही यह होता है कि लोगों के शैतानी जज़्बों को उभार कर अपने रिसाले बेचे जाएं। जब नफ़्स और शैतान उनको भड़काने वाली चीज़ों की तरफ़ माइल करे तो आदमी यह सोचे कि मुझे उनके देखने से क्या फ़ायदा? सिवाए इसके कि ख़्यालात परागन्दा हों, बुरी ख़्वाहिशें पैदा हों, कौन है जो इन गुनाहों की चलती-फिरती दावत से सैर हो सके। इस मूज़ी मर्ज़ से नहीं बचते।

नंगा होने की आख़िरी हद—अगर बदनज़री की बाढ़ इसी तरह चलती रही, तो वह दिन दूर नहीं, जब नाम-निहाद तरक़्क़ी की मतवाली ये क़ौमें बिल्कुल ही नंगी चला-फिरा करेंगी, जैसे कि आजकल नंगे मादरज़ाद मर्दों और औरतों के वाक़िए अकसर मुल्कों में एलानिया सड़कों पर दौड़ने से ज़ाहिर हो रहे हैं। ये सब इशारे हैं उस आने वाले वक़्त की तरफ़ जिस तरफ़ बदनज़री की बढ़ती बाढ़ क़ौमों को लिए जा रही है।

किसी के घर में झांकना—बदनज़री की एक क़िस्म किसी के मकान के अन्दर किसी सुराख़ या खिड़की से झांकना भी है। इस पर भी रिवायतों में धमकी आई है; और बहुत ही सख़्त धमकी आई है। यहां तक कि घर वाले को अख़्तियार दिया गया है कि झांकने वाले की आंख फोड़ दे, तो गोया नतीजा झांकना अपने आप को अंधा

बनाना है। यहां पर आम तौर पर कभी-कभी घरों के अन्दर दरवाज़ा खटखटाने के बाद जवाब न मिलने पर लेटर बॉक्स से झांका करते हैं। यह बहुत बुरा करते हैं। यह नाजायज़ और हराम है। कहने का ख़ुलासा यह है कि नज़र शैतान के तीरों में से एक ज़हर में बुझा हुआ तीर है, इसलिए हिम्मत और इरादे से निगाहों को नाजायज़ जगहों पर जाने से महफ़ूज़ रखें।

Maktabe Ashraf

बाब-4

अच्छी नज़र का ब्यान

अल्लाह जल्ल ल शानुहू व अ़म्म म नवालुहू की हज़ारों नेमतें, जो इंसानों पर हर दिन मूसलाधार बारिश की तरह बरसती हैं, उनमें से एक बहुत बड़ी नेमत आंख भी है, उसको ग़लत इस्तेमाल से बचाना यह आंख का हक़ है। इसकी सही क़द्रदानी सही जगहों पर उसको इस्तेमाल करना है।

कायनात को इबरत से देखना—आंख अल्लाह तआ़ला की बख़्शी हुई अ़ज़ीम नेमत है, जिससे हम रात-दिन अल्लाह की मख़्लूक़ को देखते हैं। इस नेमत का हक़ इस तरह अदा हो सकता है कि हम कायनात के निज़ाम में ग़ौर व फ़िक्र करके कायनात के ख़ालिक़ (पैदा करने वाले) को पहचानें। क़ुरआन पाक में सैकड़ों जगह कायनात की चीज़ों में ग़ौर व फ़िक्र करने की दावत दी गई है। अल्लाह का इर्शाद है कि—

الذی خلق سبع سموات طباقا○ ماتری فی خلق الرحمن من تفوت○
فارجع البصر هل تری من فطور○ ثم ارجع البصر کرتین ینقلب الیك
البصر خاسنا وهو حسیر○

यानी जिसने सात आसमान ऊपर तले पैदा किए (जैसे हदीस में है कि एक आसमान से ऊपर लंबे फ़ासले के साथ दूसरा आसमान है, फिर इसी तरह उससे ऊपर तीसरा और इसी तरह आगे आसमान की मज़बूती ब्यान करते हैं कि ऐ देखने वाले! तू ख़ुदा की इस

Maktabe Ashraf

सनअ़त (कारीगरी) में कोई ख़लल न देखेगा, तो अब की बार फिर निगाह डाल कर देख ले, कहीं तुझ को कुछ ख़लल नज़र आता है। (यानी बिना किसी रुकावट तू बार-बार देखेगा, अब की बार सोच-समझ कर निगाह कर, फिर बार-बार निगाह डाल कर देख (आख़िरकार) निगाह ज़लील और पस्त होकर तेरी तरफ़ लौट आएगी और शिगाफ़ नज़र न आएगा।

(ब्यानुल क़ुरआन, पारा 29, पृ० 25 अशरफ़ुल मताबेअ़)

मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी रह० फ़वाइद में तह्रीर फ़रमाते हैं कि ऐ मुख़ातब! ऊपर आसमान की तरफ़ नज़र उठा कर देख, कहीं ऊंच-नीच, दराड़ या शिगाफ़ नहीं पाएगा बल्कि एक साफ़, हमवार मुत्तसिल, मरबूत और मुनज़्ज़म चीज़ नज़र आएगी, जिसमें बावजूद मरदूद हवा और ततावुले अज़मान के यानी बहुत से ज़माने गुज़रने के आज तक कोई तफ़ावुत और फ़र्क़ नहीं आया। (पृ० 729)

Maktaba Ashraf

फलों से इबरत

انظروا الی ثمره اذا اثمر وينعه ان فی ذالکم لايات لقوم يتفکرون

देखो हर पेड़ के फल को जब वह फल लाता है और उनके पकने को, इन चीज़ों में निशानियां हैं वास्ते ईमान वालों के।

मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी रह० फ़वाइद में फ़रमाते हैं कि यानी जब शुरू में फल आता है, तो कच्चा, बदमज़ा और फ़ायदा न उठाने के क़ाबिल होता है, फिर पकने के बाद कैसा लज़्ज़तदार, मज़ेदार और कारआमद बन जाता है, सब ख़ुदा की क़ुदरत का ज़ुहूर है। (पृ० 181)

हज़रत अक़दस थानवी रह० 'मसाइलुस्सुलूक' में लिखते हैं कि

'उसके फल की तरफ़ देखो' में इस बात की दलील है कि ख़ल्क़ की तरफ़ नज़र करना जबकि 'हक़ के लिए हो, मज़म्मत के क़ाबिल नहीं, अगर मक़सूद में उसकी तरफ़ एहतियाज हो, तो मतलूब है, पस ख़ल्क़ उस वक़्त अल्लाह तआला की मिरअत यानी आईना हो जाती है। (ब्यानुल क़ुरआन, पारा 7, पृ० 144, अशरफ़ुल मताबेअ़)

बसीरत के बग़ैर बसारत बेकार है—ग़रज़ यह कि बेशुमार आयतों में कायनात को देखने और उसमें ग़ौर करने का हुक्म दिया गया है, इसलिए नज़र का एक इस्तेमाल तो अल्लाह की आयतों और कायनात में ग़ौर व फ़िक्र के लिए करना है। इस बसारत से बसीरत नसीब होती है और इस बसीरत के बग़ैर यह ज़ाहिरी बसारत बेकार है, जैसा कि अल्लाह तआला ने काफ़िरों के बारे में फ़रमाया है कि *'लहुम आयतुल-ला युब्सिरू-न बिहा'* (उनकी आंखें हैं, जिनसे वे देखते नहीं) इस आयत से मालूम हुआ कि जिस ज़ाहिरी आंख के साथ बसीरत न हो, वह गोया अंधी है। दूसरी तरफ़ इर्शाद है—

من كان في هذه اعمٰى فهو في الآخرة اعمى واضل سبيلا

(मन का-न फ़ी हाज़िही आमा फ़ हु-व फ़िल आख़िरति आमा व अज़ल-लु सबीला)

इसीलिए अल्लाह वालों की नज़रों में भी बड़ी ताक़त और क़ुव्वत होती है—

निगाहे मर्दे मोमिन से बदल जाती हैं तक़दीरें

हज़रत मौलाना इल्यास साहब रहमतुल्लाह अ़लैह के बारे में ब्यान किया जाता है कि आख़िरी दिनों में बहुत ही कमज़ोर, नातवां और मुज़महिल हो गए थे, मगर सारी ताक़त व क़ुव्वत सिमट कर नज़र में आ गई थी।

मोमिन की फ़रासत—जब बसारत के साथ बसीरत हासिल हो जाती है, तो एक ही नज़र में बहुत दूर की बात नज़र आ जाती है जैसा कि मशहूर है—

اتقوا فراسة المؤمن فانه ينظر بنور الله

यानी मोमिन की फ़रासत से डरो कि वह अल्लाह के नूर से देखता है।

तिलावत के लिए आंखों का इस्तेमाल—अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने आंख-जैसी मुग़्तनिम नेमत दी है, तो उसकी मदद से तिलावत की जाए कि इससे ज़ाहिरी और बातिनी फ़ायदे हासिल होते हैं। आंख की रौशनी बढ़ती है, आंखों में नूर आता है, दिल का ज़ंग दूर होकर दिल साफ़ हो जाता है, हाफ़िज़ा की क़ुव्वत बढ़ती है। हज़रत अक़दस रह० उस्तादी मुर्शिदी शैख़ुल हदीस दामत बरकातुहुम **'फ़ज़ाइल क़ुरआन'** पृ० 12 पर इर्शाद फ़रमाते हैं कि हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू से इह्या में नक़ल किया गया है कि तीन चीज़ें हाफ़िज़ा बढ़ाती हैं, मिस्वाक, रोज़ा, क़ुरआन पाक की तिलावत।

कुतुबबीनी और मुहताजों की इमदाद के लिए आंखों का इस्तेमाल—क़ुरआन पाक के अलावा हदीस की किताबों को देखना, मोतबर बुज़ुर्गों की किताबों को पढ़ना, अंधे, लूले, अपाहिज की मदद के लिए जाना, मोमिनों की ज़रूरतों का पूरा करना, ग़रज़ यह कि आंखों के सही इस्तेमाल के हज़ारों तरीक़े हैं, जिसका ख़ुलासा है—

وتعاونوا على البر والتقوى ولاتعاونوا على الاثم والعدوان

यानी भलाई और तक़्वा पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़ुल्म पर मदद न करो।

Maktaba Ashraf

बाब-5

बदनज़री के बारे में बुज़ुर्गों के इर्शाद

1. सैयदुल कौनैन रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मैंने अपनी वफ़ात के बाद अपनी उम्मत में औरतों के मिस्ल कोई फ़ित्ना नहीं छोड़ा।

2. हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ि० ने फ़रमाया कि अगर दो बोसीदा हड्डियां भी ख़लवत में तंहा होंगी, तो एक दूसरे का क़स्द करेंगी। (बोसीदा हड्डी से इशारा बूढ़े मर्द और बूढ़ी औरत की तरफ़ है।)

3. हज़रत शैख़ुल हदीस हाजी हाफ़िज़ मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहब दामत बरकातुहुम ने मदीना मुनव्वरा की मज्लिस में इर्शाद फ़रमाया कि बदनज़री से इबादत की मिठास और मज़ा ख़त्म हो जाता है।

4. हज़रत अक़्दस दामत बरकातुहुम के मलफ़ूज़ात, जो 'सोहबते बा-औलिया' के नाम से शाय हुए हैं, उसमें सफ़ा 116 पर हज़रत अक़्दस दामत बरकातुहुम ने निस्बत की चार क़िस्मों (निस्बत इनअ़कासी, निस्बत अलक़ाई, निस्बत इस्लाही, निस्बत इत्तिहादी) को निहायत शरह व बस्त के साथ ब्यान फ़रमाया है। उनमें निस्बते इनअ़कासी के ज़ैल में ब्यान फ़रमाते हैं कि हज़रत शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़, शाह साहब रह० फ़रमाते हैं कि (निस्बते इनअ़कासी) यह निस्बत बहुत कमज़ोर है।

Maktabe Ashraf

थोड़ी देर के लिए आईना हट जाए यानी शैख़ की मज्लिस से हट जाए तो उसका असर जाता रहता है, मगर मेरी राय यह है कि इससे नहीं जाती, बल्कि कोई इस राह में मर मिटे तो तरक़्क़ी करती रहती है। अलबत्ता मआसी से ख़ास कर बदनिगाही से यह बहुत जल्द ज़ाय हो जाती है, इसलिए इससे एहतराज़ ज़रूरी है।

5. हज़रत अक़दस दामत बरकातुहुम एक मकतूबे गरामी में तहरीर फ़रमाते हैं, वहां यानी यूरोप के माहौल में नज़र की हिफ़ाज़त बहुत ज़रूरी है।

6. हज़रत मौसूफ़ एक दूसरे मकतूब में तहरीर फ़रमाते हैं कि बदनज़री बहुत ही मुहलिक मर्ज़ है और इबादत की मिठास को ऐसा खोता है कि उसके फ़ौरी असर पर हैरत होती है। तुम भी जब चाहो, उस पर ग़ौर से तजुर्बा कर लो कि इस मूज़ी मर्ज़ के बाद देर तक इबादत में लज़्ज़त पैदा नहीं होती। एक और दूसरा तजुर्बा तुम्हें बताएं कि इस नौअ् की मासियत में कपड़ों में बू ज़्यादा आने लगती है और जिस ज़माने में अल्लाह अपने फ़ज़्ल व करम से किसी को उससे महफ़ूज़ रखे और इबादत, ख़ास तौर से दरूद शरीफ़ की कसरत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए तो कपड़ों में बू कम आती है। मैंने अकाबिर के कपड़ों को ख़ास तौर से एक हफ़्ते के बाद सूंघा कि उनमें पसीने की बू का ज़रा भी असर नहीं होता था।

7. हज़रत अक़दस मद्द द ज़िल्लहू एक मकतूबे गरामी में तहरीर फ़रमाते हैं कि यह तो बड़ी तजुर्बे वाली चीज़ है कि बदनिगाही से कपड़ों में तअफ़्फ़ुन यानी बदबू भी पैदा हो जाती है, औराद में भी दिल नहीं लगता।

8. हज़रत शैख़ुल हदीस साहब मद्द द ज़िल्लहू एक मकतूब में

Maktabe Ashraf

तहरीर फ़रमाते हैं कि यह अम्र निहायत क़ाबिले एहतिमाम और ज़रूरी है कि नौउम्रों से इख़्तिलात में बड़ी ज़रूरत है नज़र की हिफ़ाज़त की, वरना नेकी बर्बाद गुनाह लाज़िम हो जाता है।

9. पीराने पीर सैयद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रह० ने अपने साहबज़ादे को जो वसीयतें की हैं, उनमें एक वसीयत यह भी है कि मर्दों और औरतों, बिदअ़तियों, दौलतमन्दों और आ़म आदमियों के साथ सोहबत न रख, इससे तेरा दीन जाता रहेगा।

(शरीअ़त और तरीक़त, पृ० 525, मकतबा थानवी)

10. इमाम क़ुशैरी रह० अपने वसाया में तहरीर फ़रमाते हैं कि लड़कों और औरतों की सोहबत से बचे, बल्कि उनसे ज़्यादा घुल-मिल कर बातें भी न करे। (वही हवाला, पृ० 528)

11. हज़रत अबुल क़ासिम क़ुशैरी फ़रमाते हैं कि सालिक के लिए अमरदों और औरतों से मुख़ालतत रहज़न है। (ग़ज़्ज़ुल बसर, पृ० 10)

12. एक ख़ास बुज़ुर्ग ख़ास अमरदों के बारे में फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला जिसको अपनी बारगाह से मर्दूद करना चाहते हैं, उसको लड़कों की मुहब्बत में मुब्तला कर देते हैं। (वही हवाला)

13. हज़रत पीर शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह० फ़रमाते हैं कि जब तक इंसान दस चीज़ें अपने नफ़्स पर फ़र्ज़ न कर ले, उसकी परहेज़गारी कामिल नहीं होती। ज़ुबान को ग़ीबत से पाक रखे, बदगुमानी से परहेज़ करे, ठठ्ठा करने से परहेज़ करे, हराम से आंखों को बन्द करे, ज़ुबान से सच्ची बात कहे, अल्लाह तआ़ला का अपने ऊपर एहसान माने और अपने नफ़्स पर भरोसा न करे और उसको अच्छा न समझे, अपने माल को उसके मुस्तहिक़ के ऊपर ख़र्च करे,

Maktabe Ashraf

और उन लोगों पर ख़र्च न करे जो बातिल हैं या इसके हक़दार नहीं हैं, बुलन्द मर्तबा और बुज़ुर्गी की ख़्वाहिश अपने वास्ते न करे, पांचों वक़्त की नमाज़ वक़्त पर अदा करे और रुकूअ् व सुजूद को अच्छी तरह बजा लावे और सुन्नते पैग़म्बर सल्ल० की पैरवी करे और मुसलमानों से मिला रहे। (फ़ुतूहुलग़ैब)

14. इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि शहवत की आफ़तों में से एक आफ़त है 'इश्क़', वह बहुत से गुनाहों की वजह बनता है। अगर आदमी शुरू ही से एहतियात न करे तो मामला क़ाबू से बाहर हो जाता है। एहतियात की सूरत यह है कि आंख को महफ़ूज़ रखे। अगर इत्तिफ़ाक़ से किसी पर निगाह पड़ गई है तो उसको रोकना आसान है, लेकिन अगर आंखों को बिला क़ैद छोड़ देगा, तो फिर उसका ठहरना मुश्किल हो जाएगा। इस बारे में नफ़्स की मिसाल चारपाए की-सी है, अगर किसी तरफ़ जाने का क़स्द करे तो पहले ही उसकी बागडोर फेरना आसान होता है और जब मुतलक़ुलअ़नान हो गया, दौड़-भाग हाथ से छूट गई तो उसकी दुम पकड़ कर खींचना मुश्किल होता है, तो आंख को महफ़ूज़ रखना असल है।

(कीमियाए सआ़दत, पृ० 298-299)

15. हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम ने अपने बेटे को नसीहत फ़रमाई कि शेर और अज़दहे के पीछे जाना ठीक हो सकता है, मगर औरतों के पीछे हरगिज़ न जाना। (ऊपर का हवाला)

16. हज़रत यह्या बिन ज़करिया अ़लैहिस्सलाम से लोगों ने पूछा कि ज़िना कहां से पैदा होता है, फ़रमाया कि आंखों से।

(ऊपर का हवाला)

Maktabe Ashraf

17. इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि एक सूफ़ी का क़ौल है कि मुरीद पर फाड़ खाने वाला शेर झपटे तो मैं इतना नहीं डरता, जितना ग़ुलाम अमरद से डरता हूं।' (ऊपर का हवाला)

18. हज़रत सईद बिन मुसैय्यिब रह० फ़रमाते हैं कि जिस पैग़म्बर को अल्लाह तआला ने भेजा शैतान लईन औरतों के बारे में, उससे नाउम्मीद ही रहा और मैं जितना इससे डरता हूं उतना किसी चीज़ से नहीं डरता। इसी वजह से अपने घर और अपने लड़के के घर के सिवा और कहीं नहीं जाता। (ऊपर का हवाला)

19. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से इब्लीस लईन ने कहा कि किसी औरत के पास अकेले में न बैठा कीजिए, इस वास्ते कि जो मर्द औरत के साथ ख़लवत करता है, मैं उसके साथ लगा रहता हूं, ताकि उसको फ़ित्ने में डाल दूं। (ऊपर का हवाला)

20. यूसुफ़ बिन हुसैन रह० फ़रमाते हैं कि देखा मैंने सूफ़ियों की आफ़त को अमरदों से मेल-जोल में और नाजिंसों से मिलने में और औरतों से नर्मी बरतने में। (शरीअत व तरीक़त, पृ० 449)

21. शैख़ वास्ती रह० फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह किसी बन्दे की ज़िल्लत और ख़्वारी चाहते हैं, तो उन गन्दों और पड़े हुओं की तरफ़ डाल देते हैं और मायल करते हैं, मुराद इससे अमरदों से मेल-जोल है। (शरीअत व तरीक़त, पृ० 450)

22. मुजफ़्फ़र क़र्मसेनी रह० फ़रमाते हैं कि नर्मी और मेहरबानी करने में सबसे बुरा औरतों से नर्मी और मेहरबानी करना है, जिस तरह भी हो। (ऊपर का हवाला)

23. शैख़ नसीर ख़ैराबादी रह० से किसी ने पूछा कि लोग औरतों के पास बैठते हैं और कहते हैं कि इनके देखने में हमारी नीयत पाक

Maktabe Ashraf

है। उन्होंने फ़रमाया, जब तक इंसानी जिस्म बाक़ी है, अम्र व नह्य भी बाक़ी है और तू तहलील व तहरीम का मुख़ातब है।

(ऊपर का हवाला)

24. इब्ने ज़ाहिर मुक़द्दसी रह० ने फ़रमाया कि जिस आदमी की शहवत अमरद की तरफ़ देखने में हरकत में आए तो उसको देखना हराम है और जब इंसान यह दावा करे कि ख़ूबसूरत अमरद के देखने से उसकी शहवत को जोश नहीं आता तो वह झूठा है और मुतलक़ तौर पर इसलिए मबाह कर दिया गया कि लामहाला बच्चों से ख़ल्त-मल्त ज़रूर होता है तो उसमें हर्ज वाक़े न हो और जब देखने में मुबालग़ा वाक़े हो तो यह हरकत दलील है कि ख़्वाहिशे नफ़्सानी के जोश का तक़ाज़ा है। (तलबीसे इब्लीस, पृ० 335)

25. सईद बिन मुसैय्यिब रह० ने फ़रमाया कि जब तुम किसी को देखो कि अमरद लड़के की तरफ़ नज़र जमा कर देख रहा है तो उसको तोहमत लगा दो। (तलबीसे इब्लीस, पृ० 347)

26. इब्राहीम बिन हानी ने रिवायत किया कि यह्या बिन मुईन रह० ने कहा कि कभी ऐसा नहीं हुआ कि एक रास्ते में कोई अमरद लड़का मेरे साथ रहने का लालच करे और वहां अहमद बिन हंबल रह० भी हों। (तलबीस इब्लीस, पृ० 347)

27. फ़त्ह मूसली रह० कहते हैं कि मैं तीस मशाइख़ से मिला हूं जो अब्दाल समझे जाते हैं। हर एक ने मुझको रुख़्सत करते वक़्त वसीयत की कि नौजवानों की हमनशीनी से बचते रहना चाहिए।

(ऊपर ही का हवाला)

27. हसन बिन बज़्ज़ार की निस्बत सुना है कि वह इमाम अहमद बिन हंबल रह० के पास आए और उनके साथ एक ख़ूबसूरत अमरद

Maktabe Ashraf

लड़का भी था और उनसे बातें कीं, जब उठकर जाने लगे तो इमाम अहमद ने फ़रमाया कि अबू अली! इस लड़के के साथ रास्ते में न चला कर। कहने लगे, यह तो मेरा भांजा है। फ़रमाया, भले ही वह भांजा ही क्यों न हो? (तलबीसे इब्लीस, पृ० 347)

29. इमाम इब्ने जौज़ी रह० फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने आंखें नीची रखने का हुक्म फ़रमाया है, क्योंकि यही एक तरीक़ा ऐसा है जिससे दिल बिला ख़ौफ़ व ख़तर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ मुतवज्जह हो जाते हैं। (तलबीसे इब्लीस, पृ० 341)

30. हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि मुझको किसी आ़लिम पर तकलीफ़ पहुंचाने वाले दरिंदे का भी इतना डर नहीं जितना अमरद लड़के की तरफ़ से डर है। (तलबीसे इब्लीस, पृ० 346)

31. हज़रत सुफ़ियान सौरी रह० से रिवायत है, वह कहते हैं कि लड़की के पास एक शैतान और अमरद के पास दो शैतान हैं। मैं अपने नफ़्स पर, उसके दो शैतानों से डर गया और एक रिवायत में है कि लड़के के पास कुछ ऊपर शैतान होते हैं।

(तलबीसे इब्लीस, पृ० 348)

32. अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबिस्साइब ने अपने बाप से रिवायत की है, वह कहते हैं कि मैं एक आ़बिद शख़्स पर एक अमरद लड़के के बारे में 17 बाकरा लड़कियों से भी ज़्यादा डरता हूं।

(तलबीसे इब्लीस, पृ० 346)

33. इब्ने ज़ाहिर का क़ौल है कि जो आदमी नौजवानों से सोहबत रखेगा, मकरूहात में पड़ जाएगा।

(तलबीसे इब्लीस, पृ० 347)

Maktaba Ashraf

34. मुज़फ़्फ़र क़रमेसेनी ने कहा कि जो कोई सलामत व नसीहत की शर्त के साथ नौजवान लड़कों से सोहबत रखेगा तो बला में गिरफ़्तार हो जाएगा, फिर उस आदमी का क्या पूछना जो बग़ैर शर्त सलामत उनसे सोहबत रखे। (ऊपर का वही हवाला)

35. हज़रत अक़दस सहारनपुरी ने फ़रमाया कि ख़ास तौर पर अमरद की तरफ़ और नामहरमों की तरफ़ नज़र करना हाफ़िज़ा (की ताक़त) के लिए सम्म (ज़हर-जैसा) क़ातिल है।

(मकतूबाते शैख़, भाग 1, पृ० 103)

36. शुजाअ् बिन मुख़ल्लद रह० से रिवायत है कि उन्होंने बिश्र बिन हारिस रह० को यह कहते हुए सुना कि इन नौउम्रों से परहेज़ करो। (तलबीसे इब्लीस, पृ० 347)

37. अबू उसामा ने ब्यान किया कि हम एक शेख़ के पास थे जो हदीस ब्यान करते थे। उनके पास एक लड़का रह गया कि उनको हदीस सुनाता था। मैंने उठना चाहा, उन्होंने मेरा दामन थाम लिया और कहने लगे कि ठहरो इस लड़के को फ़ारिग़ हो जाने दो, उस लड़के के साथ ख़लवत में रहना नापसन्द किया।

(ऊपर का हवाला)

38. इब्ने फ़र्रुख़ रस्मी सूफ़ी रह० कहते हैं कि मैंने शैतान को ख़्वाब में देखा और कहा कि तूने हमको कैसा पाया। हमने दुनिया और उसकी लज़्ज़तों से और दौलतों से मुंह फेर लिया, अब तुझको हम पर क़ाबू नहीं। कहने लगा कि तुमको कुछ ख़बर भी है। तुम्हारा दिल राग सुनने पर और नौजवानों की सोहबत पर कैसे मायल है?

(ऊपर का हवाला)

Maktabe Ashraf

39. अबू सईद रह० कहते हैं कि इस बला से सूफ़ी लोग बहुत कम नजात पाते हैं? (ऊपर का हवाला)

40. इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि ऐ अज़ीज़े जान! तू कि जो अमरद रास्ते में आदमी के सामने आता है, शैतान तक़ाज़ा करता है कि तू उस पर नज़र डाल। देख! तो वह कैसा है? तो शैतान के सामने मुनाज़रा करना चाहिए कि मैं क्यों देखूं? अगर यह बदसूरत है तो रंजीदा भी हूंगा और गुनाहगार भी, इस वास्ते कि मैंने तो इस क़स्द से देखा होगा कि वह ख़ूबसूरत है। अगर ख़ूबसरूत है, तो चूंकि देखना हलाल नहीं, इस वजह से गुनाहगार होगा और रंज व हसरत रहेगी और अगर उसके साथ जाऊं तो दीन और उम्र उसके नज़्र करूं और शायद मतलब को न पहुंचूं? (कीमिया-ए-सआदत, पृ० 303)

Maktabe Ashraf

बाब-6

बदनज़री का इलाज

बदनज़री जिसे हम हल्का समझते हैं, जब इस क़दर मुह्लिक और मूज़ी मर्ज़ है तो उसे दूर करने की फ़िक्र करनी चाहिए। दीनी बुज़ुर्गों ने इसके मुस्तक़िल इलाज बताए हैं, जो नीचे लिखे जाते हैं—

इलाज—1. हज़रत अक़दस मुर्शिदना शैख़ुल हदीस दामत बरकातुहुम ने एक मकतूबे गरामी में औरतों पर बदनिगाही के इलाज के सिलसिले में तहरीर फ़रमाया कि बदनज़री से हिफ़ाज़त का तरीक़ा यह है कि निगाह को ज़्यादातर नीची रखा जाए और जिसकी कोई चीज़ अच्छी लगे, दोबारा हरगिज़ न देखा जाए।

2. हज़रत अक़दस थानवी नव्वरल्लाहु मरक़दहू ने नीचे लिखे इलाज लिखे हैं—बदनज़री का आसान इलाज यह है कि राह चलते वक़्त नीची निगाह करके चलना चाहिए। इधर-उधर न देखिए, इन्शाअल्लाह तआला महफ़ूज़ रहेगा।

3. जब दिल किसी हसीन की तरफ़ माइल हो, तो इसका इलाज यह है कि फ़ौरन किसी ऐसे बदसूरत का ख़्याल सोचो कि एक आदमी, काला रंग, चेचक के दाग़ वाला, आंखों से अंधा है, सर से गंजा है, दांत आगे को निकले हुए हैं, नाक से नकटा है, होंठ बड़े-बड़े हैं, सुनक बह रहा है और मक्खियां उस पर बैठती हैं, चाहे ऐसा

Maktaba Ashraf

आदमी देखा न हो, मगर ख़्याल की दुनिया में रहकर मान लो, फिर उस पर ग़ौर करो, इन्शा अल्लाह वह फ़साद जो हसीन के देखने से दिल में पैदा हुआ है, वह जाता रहेगा। (ऊपर का हवाला)

4. जब किसी हसीन पर नज़र पड़ जाए तो फ़ौरी इलाज यह है कि ख़्याल करे कि यह महबूब एक दिन मरेगा और क़ब्र में जाएगा, वहां इसका नाज़ुक बदन सड़-गल जाएगा, कीड़े इसको खा लेंगे। (ऊपर का हवाला)

5. आगे के लिए तक़ाज़ा पैदा न हो, इसका इलाज यह है कि अल्लाह के ज़िक्र की कसरत करो, दूसरे यह कि अल्लाह के अज़ाब को सोचो, तीसरे यह कि यह सोचो कि अल्लाह जानता है कि मुझ पर पूरी क़ुदरत हासिल है, लंबे मुराक़बे और मुजाहदों की कसरत से यह चोर दिल से निकलेगा। (ऊपर का हवाला)

एक अहम तंबीह—बदनज़री का माद्दा ही ख़त्म हो जाए यानी बिल्कुल मैलान (झुकाव) ही कभी पैदा न हो, यह वह मर्तबा (दर्जा) है जिसको नादान सालिक मतलूब समझते हैं और इसके हासिल न होने पर परेशान होते हैं। जब वे अपने अंदर किसी वक़्त ऐसा मैलान पाते हैं तो समझते हैं कि हमारा सब ज़िक्र व शग़्ल व मुजाहदा ज़ाया गया। यहां तक कि ऐसे कलिमे परेशानी में उनके मुंह से निकल जाते हैं कि बेअदबी और गुस्ताख़ी हो जाती है। जैसे हम इतने रोज़ से हक़ की तलब में रहे, मगर हम पर रहम नहीं आता कि वैसे ही महरूम हैं। याद रखो कि यह शैतानी वस्वसा है। यह हरगिज़ मतलूब नहीं कि माद्दा ख़त्म हो जाए। अगर माद्दा जाता रहे तो गुनाह से बचने में क़ोई क़माल नहीं। अंधा अगर फ़ख़्र की बात करे कि मैं देखता नहीं तो कौन-सी फ़ख़्र की बात है, देखेगा क्या देखने का आला ही

नहीं। (ऊपर का हवाला)

6. जब दिल में ऐसा ख़्याल पैदा हो तो ऐसा करो कि वुज़ू करके दो रकूअत पढ़ो और तौबा करो और अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करो कि जब निगाह पड़े या दिल में तक़ाज़ा पैदा हो, फ़ौरन ही ऐसा करो। एक दिन तो बहुत-सी रकूअतें पढ़ना पड़ेंगी, दूसरे दिन बहुत कम ख़्याल आएगा, इस तरह धीरे-धीरे निकल जाएगा, इसलिए कि नफ़्स को नमाज़ बड़ी गिरां है। जब देखेगा कि ज़रा-सा मज़ा लेने पर यह मुसीबत होती है कि यह हर वक़्त नमाज़ ही में रहता है, फिर ऐसे वस्वसे न आएंगे। (ऊपर का हवाला)

नोट—ऊपर के दिए गए इलाज हज़रत मौलाना थानवी रह० के **वाज़ ग़ज़्ज़ुल बसर** से लिए गए हैं। इसके बाद जो इलाज आ रहे हैं, वे **'तर्बियतुस्सालिक'** से नक़ल किए जाते हैं, जिसका उन्वान हाल और तहक़ीक़ से होगा। हाल का मतलब यह है कि मुरीद सालिक ने हज़रत को ख़त के ज़रिए अपने मर्ज़ का हाल लिखा। हज़रत ने जो उसका जवाब दिया, वह तहक़ीक़ के उन्वान से दर्ज है। **तर्बियतुस्सालिक** से जो नक़ल किया जाता है, वह ठीक वही नहीं है, बल्कि बदनिगाही के बारे में जो हाल और तहक़ीक़ है, उसी को नक़ल किया जाता है।

7. **हाल**— अपनी दो बीवी के सिवा अजनबी औरतों का ख़्याल भी दिल में आता है, और उसके देखने को दिल चाहता है, ख़ूबसूरत हो या न हो।

तहक़ीक़—यह बेशक मर्ज़ है, इसका इलाज मुजाहदा है। यानी ताक़त के साथ मुख़ालफ़त करना नफ़्स की और ख़ता होने पर कोई जुर्माना उस पर मुक़र्रर करना। जैसे एक नज़र में बीस नफ़्लें, इससे

इन्शाअल्लाह पूरी इस्लाह हो जाएगी।

(तहज़ीब तर्बियतुस्सालिक, मकतबा तालीफ़ाते अशरफ़ीया)

8. सवाल—चूंकि नशिस्त (उठना-बैठना) ज़्यादा दुकान पर रहती है। अकसर औरतें हर क़िस्म की नज़र के सामने से गुज़रती है, पहली बार नज़र पड़ने से तस्कीन नहीं होती, जी यह चाहता है कि उसको फिर देखूँ, फिर इरादे के साथ नज़र कर लेता हूं, इसका इलाज चाहता हूं।

जवाब—जब किसी हसीन की तरफ़ मैलान हो तो उस वक़्त उसे उस हदीस यानी *'इन्नल्ला-ह जमीलुन युहिब्बुल जमाल'* के मज़्मून का तसव्वुर और मुराक़बा करना चाहिए कि हक़ीक़ी जमील वह है, तो दूसरे की तरफ़ नज़र न करना चाहिए। (ऊपर का हवाला)

9. हाल—रास्ते वग़ैरह में कहीं बुरी निगाह का मौक़ा मिलता है तो अपने दिल से यों कहता हूं कि अगर तू अपने को बुरी निगाह से बचा ले तो तेरी बड़ी करामत यही है, बल्कि लाखों करामतें इस पर कुरबान कर दी जाएं। तू सज़ावार है और अ़वारिफ़ का यह क़ौल याद आ जाता है कि अल्लाह तआ़ला इस्तिक़ामत तलब करते हैं और हम करामत के पीछे पड़ते हैं और अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल से बहुत सहूलत से बचा लेता हूं। इन ख़्यालों की तस्हीह फ़रमाएं।

तहक़ीक़—बिल्कुल सही, अल्लाह तआ़ला इल्म व फ़हम में ज़्यादा बरकत दे। (पृ० 225)

10. हाल—एक लम्बी मुद्दत से नज़रबाज़ी के मर्ज़ में मुब्तला हूं। अगरचे शुक्र है कि नज़रबाज़ी के साथ निगाह व दिल की ज़िना से तो बचा हुआ हूं, मगर यह चस्का यानी शौक़ और उसमें लज़्ज़त

मिलना इसी आफ़त का पता देता है। अल्लाह तआ़ला का शुक्र है कि हुज़ूर के सदक़े से अब इस मर्ज़ में पहले के मुक़ाबले में बहुत ज़्यादा कमी आ गई है। इसके बजाए कि पहले हर औरत को, यहां तक कि मवेशियों और दूसरे जानवरों के ख़ास मक़ामों पर नज़र डालने को बार-बार तक़ाज़ा होता था, जिससे मजबूर होकर बार-बार नज़र पड़ती थी। अब अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल से पड़ती हुई नज़र को कोई रोकता है तो फ़ौरन नीची कर लेता हूं, मगर अपनी बीवी और सोहबत करने की शक्ल का ख़्याल अकसर नज़रों में रहता है। चूंकि यह हलाल और मंकूहा का ख़्याल है, इसलिए इससे बचने की ज़्यादा कोशिश नहीं करता हूं। न मालूम यह मुनासिब है या नहीं। दुआ़ फ़रमाई जाए कि बजाए इस मश्गूली के ज़िक्र और यादे हक़ की मश्गूली नसीब हो।

तहक़ीक़—नज़रेबद के मर्ज़ का इलाज हिम्मत और अ़ज़ाब के सामने होने के अलावा और कुछ नहीं है। बाक़ी मंकूहा का ख़्याल मासियत तो बिल्कुल नहीं और हद से ज़ायद ऐसा ही है, जैसा कि बहुत-सा घी खाने से मेदा ख़राब हो जाता है। (पृ० 226)

11. हाल— यह है कि यह रूसियाह बहुत दिनों से इस मर्ज़ में मुब्तला है कि अच्छी हसीन औरतों की तरफ़ देखने की रग़बत है। पहले यह मर्ज़ हर दिन तरक़्क़ी पर था। मगर हुज़ूर की बरकत से अब इसमें बहुत कमी आ गई है और ऐसे मौक़ों पर मैं निगाह को बचा लेता हूं, मगर कभी-कभी नफ़्स ग़ालिब आ जाता है, मगर फ़ौरन मुतवज्जह हो जाता हूं और तौबा व इस्तिग़फ़ार कर लेता हूं और असल मर्ज़ यह है कि कभी-कभी दिल में यह ख़्याल पैदा हो जाता है कि हसीन औरतें मेरी तरफ़ देखें। अकसर औक़ात उस रास्ते

Maktabe Ashraf

को छोड़ कर जाता हूं, मगर फिर सरकश नफ़्स ग़ालिब आ जाता है और उसी रास्ते ले जाना चाहता है।

तह्क़ीक़—अख़्तियारी काम का इलाज क़स्द व हिम्मत के अलावा और क्या हो सकता है। अलबत्ता इस हिम्मत को ताक़त बख़्शने के लिए कोई जुर्माना अपने ऊपर मुक़र्रर करना मुनासिब है। जब ऐसी लग़्ज़िश हो जाए, सौ रकअ़त नफ़्ल पढ़ना चाहिए।

12. हाल—अकसर औक़ात जी चाहता है कि कपड़े ख़ूब साफ़ हों और हर वक़्त साफ-सुथरा रहूं और जब नया कपड़ा बदलता हूं तो यह ख़्याल होता है कि लोग मेरी तरफ़ देखें, ख़ास तौर से औरतें।

तहक़ीक़—इलाज यह है कि जान-बूझ कर कपड़े बहुत ख़राब और पुराने पहनें।

13. हाल—असल मर्ज़ में भी बहुत कमी है। इत्तिफ़ाक़ी तौर पर कभी किसी नामहरम की तरफ़ आंख उठ जाती है। इससे कफ़्फ़ारे के लिए और वक़्तों में तो फ़ुर्सत नहीं मिलती, अलबत्ता मग़्रिब की नमाज़ के बाद रोज़ाना छः नफ़्ल पढ़ने का मामूल कर लिया है।

तहक़ीक़—इससे फ़ायदा कम होगा, जुर्माना की नफ़्लें इस दायमी मामूल के अलावा होनी चाहिए, वरना मामूल दायम से ज़जर नहीं होता, क्योंकि नफ़्स कहता है कि यह तो हर हाल में पढ़ना ही है, चाहे निगाह हो या न हो, फिर बुरी निगाह क्यों छोड़ूं? यह भी नफ़्स कहेगा कि इससे तो कफ़्फ़ारा हो ही जाएगा, फिर क्यों परहेज़ करूं? और मुस्तक़िल तौर पर पढ़ने से चूंकि पढ़ना गिरां होगा, इस गिरानी के सबब वह बुरी निगाह से बचेगा। (पृ० 228)

14. हाल—जब किसी पर निगाह पड़ी, फ़ौरन जबरन उधर से निगाह हटा ली, और तेज़ी से उस जगह से चला गया और इस्तग़्फ़ार

Maktabe Ashraf

पढ़ लिया, मगर फिर भी तक़ाज़ा इस क़दर रहता है कि अल्लाह की पनाह! और कभी-कभी ऐसा भी होता है कि एक बार निगाह पड़ने के बाद दो चार सेकेंड उस पर नज़र क़ायम रहती है, मगर फिर जब ख़्याल आता है, फ़ौरन हटा कर तौबा कर लेता हूं, लेकिन इसको क्या करूं, यह जो निगाह हो जाती है, उससे सख़्त परेशान हूं। जानता हूं कि इस्तग़्फ़ार कर ली जाए, मगर दिल साफ़ नहीं होता। इससे मालूम होता है कि अभी दिल में उसकी कसर बाक़ी है, वरना इस्तग़्फ़ार से तो क़ल्ब साफ़ हो जाता है। यह समझ कर और भी दिल परेशान होता है।

तहक़ीक़—इस्तग़्फ़ार से इतनी जल्दी साफ़ नहीं हुआ करता, बल्कि आगे जब ऐसे मौक़ों पर कुछ बार ज़ब्ते नफ़्स हो, उसके नूर से दिल में सफ़ाई पूरी होती है। इसमें हिम्मत मज़बूत होनी चाहिए।

(ऊपर का हवाला)

15. हाल—फिर यह कि वस्वसे बहुत आते हैं। अगरचे वस्वसे, वस्वसे के दर्जे में नुक़सानदेह नहीं, मगर उनका सिलसिला आगे को चलता है और गन्दे ख़्यालों का सिलसिला बंध जाता है, इसलिए ये वस्वसों के दर्जे में रहते ही नहीं। हां! जब ख़्याल आया कि अरे! यह क्या कर रहा है? कि इसको आगे बढ़ा रहा है, यही तो मासियत है तो रुक जाता हूं और तौबा कर लेता हूं, मगर मुश्किल यह है कि यह ख़्याल ही कम आता है, इसलिए वह यक़ीनन मासियत के दर्जे तक पहुंच जाता है, इसलिए इसके लिए हज़रत से दुआ का ख़्वास्तगार हूं कि अल्लाह तआला मुझे इससे नजात दे।

तह्क़ीक़—दुआ करता हूं कि जो तदबीर इसके लिए कर रहे हो, काफ़ी है। करात-मरात करने से इन्शाअल्लाह इसका जल्दी-जल्दी

Maktabe Ashraf

इस्तिहज़ार होने लगेगा, फिर यही हाल हो जाएगा, *व मा ज़ालि-क अ़लल्लाहि बिअ़ज़ीज़०* (पृ० 229)

16. हाल—दो ऐब बड़े ज़बरदस्त मौजूद हैं—एक रिया (दिखावा), दूसरे शर्म आती है कहते हुए मगर है वह नज़रबाज़ी। कोशिश नहीं, बल्कि बचने की सई होती है। लेकिन ऐसा मौक़ा अगर इत्तिफ़ाक़न पेश आ जाता है, तो नज़र डाल कर गुनाह करने लगता हूं। अगर ऐब छिपाता रहूं, इस्लाह कैसे हो? हुज़ूर की तवज्जह की ज़रूरत और मेरे लिए जो हुक्म हुआ, उस पर अमल करूं, ख़ुदा मददगार है।

तहक़ीक़—हिम्मत के बग़ैर कोई काम नहीं होता। बदनज़री का भी इलाज यही है। जिस वक़्त ऐसा मौक़ा हुआ करे, यह ख़्याल कर लीजिए कि अल्लाह तआ़ला इस वक़्त भी देख रहे हैं। अगर हमारा पैर इस हरकत को देखता हो, तो हमारी कभी जुरअ॔त न हो तो अल्लाह तआ़ला के देखते हुए जुरअ॔त, ग़ज़ब है! और क़ियामत में भी बाज़पुर्स करेंगे। अगर सज़ा का हुक्म कर दिया तो कैसे बनेगी? बार-बार इस ख़्याल के हाज़िर करने से इन्शाअल्लाह कामयाबी होगी और रिया के बारे में कभी ज़ुबानी अ़र्ज़ करूंगा। (ऊपर का हवाला)

17. हाल— ग़फ़लत व कमहिम्मती, दस्तूर के मुताबिक़ ज़्यादा से ज़्यादा तबाही मचा रहे हैं और उस पर बदनज़री और सितम ढा रही है। बहुतेरी तदबीरें करता हूं लेकिन अब भी पहला दिन ही है। इसलिए दुआ़-ए-ख़ैर और इलाज से दस्तगीरी फ़रमाई जाए।

तहक़ीक़—क्या ख़ाक तदबीर कर रहे हैं? इसकी तदबीर सिर्फ़ हिम्मत है जो कि अख़्तियारी है। वही नहीं हो सकती तो इनायत करके मेरे पास ख़त न भेजना, मुझसे यह तकलीफ़ उठाई नहीं जाती। (ऊपर का हवाला)

18. हाल—बदनज़री के नुक़सानों से बचने के लिए कमतरीन अकसर हिस्सा दिन का गांव से बाहर रहता है। इस मुद्दत में ज़ुह्र व अ़स्र की नमाज़ें जामअ़त से हासिल नहीं हो सकतीं, चूंकि पानी भरने का तालाब मस्जिद के ठीक सामने और बिल्कुल क़रीब है और इन ही वक़्तों में ग़ैर-महरमों का हुजूम होता है, इसलिए एहतियात के तौर पर मस्जिद नहीं जाता। कहीं किसी फ़ित्ने में मुब्तला न हो जाऊं। क़िब्ला! जमाअ़त मेरे हाथ से जाने का भी मुझे बहुत रंज होता है। मुनासिब तज्वीज़ से मुत्तला फ़रमाएं।

तह्क़ीक़—वहां जमाअ़त मुअक्कदा (ताकीदी) ही नहीं।

(पृ० 230)

19. हाल—अहक़र की अ़र्ज़ है कि नज़र में एहतियात नहीं। इलाज फ़रमाया जाए। हज़रत वाला ने फ़रमाया कि यह फ़े'ल (काम) अख़्तियारी है या ग़ैर-अख़्तियारी? दूसरी बात पर *'ग़ज़्ज़ुलबसर'* (नज़र नीची रखना) का हुक्म क्यों फ़रमाया? और पहली बात पर अख़्तियार के इस्तेमाल के अलावा कुछ और भी है? अगर नहीं, तो फिर उसका इस्तेमाल यों नहीं किया जाता।

हुज़ूर की तंबीह से यह मालूम हुआ कि फ़े'ल अख़्तियारी है और इलाज का इस्तेमाल अख़्तियारी है, मगर इसके बावजूद फिर अख़्तियारी बात के इस्तेमाल की हिम्मत नहीं होती और गुनाह हो जाता है। हिम्मत की ताक़त नहीं, इसकी तदबीर क्या करूं?

तहक़ीक़—ताक़त भी इस्तेमाल ही से पैदा होगी और इस्तेमाल में ताक़त की ज़रूरत नहीं, हिम्मत की ज़रूरत है। गो इसमें तकलीफ़ हो, कुलफ़त भी हो। इल्मी इस्तेदाद तालिबे इल्म में कैसे पैदा होती

Maktabe Ashraf

है– इल्म के इस्तेमाल से, मुताला करके, दर्सों के ज़रिए, बहस व मुबाहसा करके। अब इनमें इस ताक़त का इन्तिज़ार करे, जो इनके बाद हासिल होती है तो नतीजे के तौर पर मायूसी के अलावा और क्या होगा? इसलिए इसको तकलीफ़ से अख़्तियार किया जाता है। इस सवाल से सख़्त रंज हुआ कि ऐसे मामले में भी यह शुब्हा, जिससे मालूम होता है कि अमल का क़स्द ही नहीं। इन्नालिल्लाह! ऐसी हालत में चूंकि मैं ऐसे रंज को बरदाश्त नहीं कर सकता, इसलिए मुकातिब से माफ़ी चाहता हूं। जिसने ग़ज़्ज़ुल बसर का हुक्म दिया है, वह क़ियामत में जवाब देगा, क़ौली या अ़मली।

(ऊपर का हवाला)

20. हाल—अहक़र ने हुज़ूरे वाला की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया था कि आगे इन्शाअल्लाह तआ़ला बदनज़री से अपने आपको रोक दूंगा। अलहम्दु लिल्लाह! अब तक इस गुनाह में मुब्तला नहीं हुआ सिर्फ़ अचानक नज़र वाक़े हो जाती है, तो फ़ौरन इन्तिज़ाम कर लेता हूं और नज़र दूसरी तरफ़ कर लेता हूं।

तहक़ीक़—मुबारक हो, अल्लाह तआ़ला इस्तिक़ामत बख़्शे।

इलाज नं. 21 यूरोप के हालात के एतबार से मेरे ख़्याल में इन्शाअल्लाह यह एक मुरक्कब इलाज भी फ़ायदेमंद होगा। वह यह कि क़ुरआन करीम में जन्नती हूरों की ये सिफ़तें ब्यान हुई हैं– *'हूरुम मक़्सूरातुन फ़िन ख़ियाम०'* (हूरें रुकी रहने वाली ख़ेमा हैं) इससे मालूम होता है कि औरत ज़ात की ख़ूबी घर में रुके रहने ही में है जैसे कि हूर की सिफ़त ब्यान की गई है, दूसरी और तीसरी सिफ़ते ईमान ब्यान की गई है।

Maktabe Ashraf

'क़ासिरातुत्तर्फ़ि लम यत मिस्हुन-न इन्सुन क़ब्ल हुम व ला जान्न' (इनमें औरतें हैं नीची निगाह वालियां, नहीं कुरबत की उनसे किसी आदमी ने इनसे पहले और न किसी जिन्न ने)

इस आयत में दो सिफ़तें ब्यान की गई हैं कि नज़र झुकी हुई और इंसानों और जिन्नों के छूने से पाक। चौथी सिफ़त यह ब्यान की गई *'अज़वाजुम मुतह्हरतुन'* यानी हैज़ व निफ़ास से पाक बीवियां *'क-अन्नहूनल याक़ूतु वल मरजान'* गोया वे याक़ूत व मरजान हैं। ये सिफ़तें जो ब्यान की गई हैं, 'वे बीवियां जो पाक व साफ़ हैं, जब निफ़ास की गन्दगी से दूर, न पसीना, निगाहें झुकी हुई हैं, घरों में रुकी हुई हैं, किसी इंसान या जिन्न ने मस तक न किया, ख़ूबसूरत होने के लिहाज़ से याक़ूत-मरजान, मोतियों के मानिन्द और यह यूरोप में रात-दिन घूमने वाली यूरोपियन औरतें, जिनकी निगाहें पाक नहीं, कई-कई इंसानों से आशनाई करने वालियां, गन्दी औरतों पर क्यों फ़रेफ़ता हूं। उनसे नज़र बचा लूं। इन्शाअल्लाह जल्ल ल शानुहू उम्दा सिफ़तों वाली हूरें अ़ता फ़रमाएंगे। इन ख़ूबियों का ख़ूब तसव्वुर और मुराक़बा करे और अल्लाह के ज़िक्र की कसरत और इस्तग़फ़ार करे, इन्शाअल्लाह नज़रबाज़ी से हिफ़ाज़त उसकी हो जाएगी।

ये कुल इक्कीस इलाज हुए जो इन्शाअल्लाह काफ़ी होंगे। अल्लाह हमें हिम्मत, ताक़त दे और हमें अपनी नज़रों को पाक व साफ़ और दिलों को माफ़ रखने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। (आमीन)

बाब-7

बुज़ुर्गों के वाक़िए

1. शैतान सब के साथ है। एक बुज़ुर्ग थे। वह निगाह के बारे में एहतियात न करते थे। इसलिए कि बूढ़े थे *'ग़ैरु उलिल इरबा'* (जिनको ख़्वाहिश न हो) में दाख़िल हो गए थे, इसलिए उनको औरतों से ज़्यादा बचाव न था। एक दूसरे बुज़ुर्ग ने उनको नसीहत की, तो उन्होंने न माना। इन बे-एहतियात बुज़ुर्ग ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा और यह मसला पूछा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर मर्द हो जुनैद और औरत राबिआ़ बसरी हो और वे दोनों एक जगह तंहा हों, तो तीसरा उनका शैतान होगा।

2. देखने से क्या फ़ायदा—एक बुज़ुर्ग थे। वह बात करते वक़्त मर्दों को भी नहीं देखते थे। उनसे किसी ने वजह पूछी; फ़रमाया कि दो क़िस्म के लोग हैं—एक तो वे जिनको मैं जानता हूं और दूसरे वे जिनको मैं नहीं जानता। जिनको मैं पहचानता हूं, उनको मैं बिना देखे भी आवाज़ से पहचान लेता हूं; देखने की क्या ज़रूरत है? और जिनको नहीं पहचानता, उनको देखने से क्या फ़ायदा?

(ग़ज़्ज़ुल बसर, पृ० 14)

3. एक सबक़ भरा वाक़िया—एक बुज़ुर्ग तवाफ़ कर रहे थे, जिनकी एक ही आंख थी, दूसरी न थी। वह तवाफ़ करते हुए यह कहते थे—

اللهم انی اعوذبك من غضبك

'अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन ग़-ज़बि-क'

(ऐ अल्लाह! मैं तेरे गुस्से से पनाह मांगता हूं।)

किसी ने पूछा, इस क़दर क्यों डरते हो? क्या बात है? कहा, मैंने एक लड़के को बुरी नज़र से देख लिया था, ग़ैब से चपत लगी और एक आंख फूट गई, इसलिए डरता हूं कि कहीं फिर दोहरा न दिया जाए। (ऊपर का हवाला, पृ० 16)

5. बदनज़री की वजह से क़ुरआन भूल गया—हज़रत जुनैद बग़दादी जा रहे थे। एक नसरानी का हसीन लड़का सामने से आ रहा था। एक मुरीद ने पूछा, क्या अल्लाह तआला ऐसी सूरत को भी दोज़ख़ में डालेंगे? हज़रत जुनैद बग़दादी रह० ने फ़रमाया कि तूने उसको 'अच्छी' नज़र से देखा है, बहुत जल्द इसका मज़ा तुमको मालूम होगा। चुनांचे उसका नतीजा यह हुआ कि वह आदमी क़ुरआन भूल गया। *नऊज़ुबिल्लाहि मिन ज़ालिक०*

Makatabe Ashraf

5. शादी कर ली—इमाम ग़ज़ाली रह० कीमियाए सआदत में फ़रमाते हैं कि मुरीदों में से एक आदमी कहता है कि मुझ पर इस क़दर शहवत ग़ालिब हुई कि मैं बरदाश्त न कर सका। मैंने बहुत दुआ, आह व ज़ारी की। एक रात एक बुज़ुर्ग को ख़्वाब में देखा कि मुझसे कहते हैं कि तुझे क्या हुआ? उनसे मैंने हाल अर्ज़ किया। उन्होंने मेरे सीने पर हाथ फेर दिया। जब मैं जागा तो सुकून हुआ। जब एक साल गुज़र गया तो फिर शहवत पैदा हुई, मैंने बहुत ज़ारी की, उन्हीं बुज़ुर्ग को ख़्वाब में फिर देखा, फ़रमाया कि तू चाहता है कि मुझसे शहवत ख़त्म हो जाए। मैंने अर्ज़ किया कि हां। फ़रमाया, गरदन झुका। मैंने झुका दी। बस एक तलवार निकाली और गरदन

पर मारी। मैं जब जागा तो सुकून हो गया। जब एक साल गुज़रा तो फिर शहवत पैदा हुई। फिर मैंने ज़ारी को और उन बुज़ुर्गों को ख़्वाब में देखा, वह मुझसे फ़रमाते हैं कि उस चीज़ का दफ़ा कहां तक ख़ुदा से चाहेगा, जिसके दफ़ा करने को वह दुरुस्त नहीं रखता है। फिर मैं जागा और शादी कर ली, यहां तक कि शहवत से नजात पाई।

(कीमिया-ए-सआदत, पृ० 299)

6. यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की हिम्मत अफ़ज़ाई—सुलैमान बिन बश्शार रह० बहुत ही हसीन आदमी थे। एक औरत ने अपने आपको उनकी ख़िदमत में पेश किया। वह भागे। कहते हैं कि उसी रात में मैंने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलातु वस्सलाम को ख़्वाब में देखा और पूछा कि आप यूसुफ़ अलैहिस्सलाम हैं? फ़रमाया, हां, मैं यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) हूं कि मैंने इरादा किया और तू वह सुलैमान है कि तूने इरादा भी नहीं किया। यह उस आयते करीमा की तरफ़ इशारा है।

(ऊपर का हवाला, पृ० 300)

7. फ़लक ने नया वाक़िया दिखाया—सुलैमान बिन बश्शार रह० ने फ़रमाया कि मैं हज को जाता था। जब मदीना मुनव्वरा से निकल कर इबवा में उतरा तो मेरा साथी अनाज (ग़ल्ला) लेने चला गया। अरब की एक औरत माह तलअत बेनक़ाब जैसे बद्र बे-सहाब मेरे पास आई और अपनी ज़ुबान में यों कहने लगी—

सोहबते साक़िया क़दह पर शराब कुन,
दौरे फ़लक बरंग नदारद शताब कुन,
साक़िया बहूरे ख़ुदा अज़ राहे अल्ताफ़ व करम,
बादा-ए-वस्ल से भर दे मेरे पैमाने को।

मैं समझा कि इसे खाने की ख़्वाहिश है, इस वजह से यह कलाम

Maktabe Ashraf

है। दस्तरख़्वान मांगा कि उसे खाना दूं। उसने कहा, मैं यह नहीं चाहती, बल्कि मेरा मुद्दआ यह है जो मतलब औरतों को ख़ास मर्दों ही से होता है। वह सुनकर मैं परेशान हुआ और रोने लगा। इतना ज़ोर दिया कि इस झूठे ख़्याल को उसके दिल से धोया। आंसुओं की झड़ी देखकर वह माह पारा बुर्के के बादल में छुप गई और अपनी मंज़िल को रवां हो गई। वह साथी जब फिर कर आया तो मुझमें रोने का असर पाया, पूछा यह क्या हाल है? मैंने कहा, लड़कों-बालों का ख़्याल वबाल की वजह है। उसने कहा, तू अभी लड़कों-बालों से फ़ारिग़ नहीं हुआ। लड़कों-बालों का न वह्म था न ख़्याल था, कोई नया मामला पेश आया है, फ़लक ने कोई नया वाक़िया सिखाया है, मुझसे ब्यान कर। जब वह बहुत गिड़गिड़ाया तो मैंने कह दिया। उसने जो सुना तो वह भी रोने लगा। मैंने पूछा कि तू क्यों रोता है? कहा कि इस वजह से कि मैं डरता हूं कि अगर यह मामला मुझे पेश आता, तो मैं ऐसा न कर सकता।

फिर जब हम मक्का मुअ़ज़्ज़मा में पहुंचे और तवाफ़ व सई कर चुके तो मैं एक हुजरे में सो गया। एक आदमी को देखा कि बहुत ज़्यादा हसीन व जमील, कुशादा-रू व ख़ुश्बूदार दराज़ क़द है। मैंने पूछा, तुम कौन हो? उन्होंने फ़रमाया कि मैं यूसुफ़ हूं। मैंने अ़र्ज़ किया कि यूसुफ़ सिद्दीक़? फ़रमाया, हां। मैंने अ़र्ज़ किया कि मिस्र के अज़ीज़ के साथ आपका क़िस्सा अ़जीब व ग़रीब है? फ़रमाया कि आराबी ज़न के साथ तेरा यह क़िस्सा अ़जीब तर है।

(ऊपर का हवाला पृ० 300)

8. तौबा की बरकत—हज़रत बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़नी क़ुद्स ने कहा है कि एक क़साई अपने पड़ोसी की लौंडी पर आशिक़ था।

Maktabe Ashraf

एक बार वह लौंडी खेतवाई को जा रही थी। वह क़साई पीछे-पीछे जाकर उससे लिपट गया। लौंडी ने कहा, ऐ जवांमर्द! जिस क़दर तुझे मुझसे मुहब्बत है, उससे ज़्यादा मुझे तुझसे इश्क़ है, लेकिन क्या करूं? ख़ुदा से डरती हूं। क़साई ने कहा कि नेकबख़्त! जब तू कह रही है ख़ुदा से डरती हूं तो मैं क्योंकर न डरूं? यह कहकर तौबा की। फिर राह में उस पर प्यास ग़ालिब हुई। हलाक हो जाने का डर था कि एक आदमी (पैग़म्बर), वक़्त का रसूल कहीं जाता था, वह तशरीफ़ लाए और उस क़साई से पूछा कि तुझे क्या आफ़त पहुंची है? जवाब दिया कि प्यास की शिद्दत है। उन्होंने फ़रमाया कि तू दुआ़ कर, हक़ तआ़ला बादल भेज दे और जब तक हम शहर को न पहुंचें, वह हम पर साया किए रहे। तू यह दुआ़ कर और मैं इस दुआ़ पर आमीन कहूं। क़साई ने कहा कि मैं तो कुछ इबादत नहीं करता हूं, तुम ही दुआ़ करो, मैं उस पर आमीन कहूं। ग़रज़ यह कि ऐसा ही किया गया। बादल आया और उनके सर पर छा गया, यहां तक एक दूसरे से जुदा हुए, वह बादल बराबर क़साई के साथ चला और वह रसूल पैग़म्बर धूप में चले और क़साई से फ़रमाने लगे कि ऐ जवान! तू कहता था कि मैं कुछ इबादत नहीं रखता हूं, अब राज़ खुला कि यह बादल तो तेरे ही वास्ते था, तू अपना हाल बता। क़साई ने कहा कि मैं और तो कुछ नहीं जानता, मगर इस लौंडी के कहने से तौबा की है। रसूल पैग़म्बर ने फ़रमाया कि ऐसा ही है। हक़ तआ़ला शानुहू के नज़दीक जो मक़बूलियत तौबा करने वाले के वास्ते है, वह किसी के वास्ते नहीं। (कीमिया-ए-सआ़दत, पृ० 301)

ग़ार खुल गया—हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि रसूल मक़बूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि पुराने ज़माने में तीन आदमी सफ़र को गए। जब रात हुई तो एक ग़ार के अन्दर चले

गए, ताकि बे-ख़ौफ़ रहें। इत्तिफ़ाक़ से पहाड़-जैसा बड़ा एक पत्थर गिरा कि ग़ार का मुंह ऐसे बन्द हो गया कि निकलने का रास्ता न रहा और इस पत्थर को जुंबिश देना नामुम्किन था। इन बेचारों ने आपस में कहा कि इसकी कोई तदबीर नहीं है, मगर यह कि हम तीनों दुआ़ करें और हर एक नेक अमल अ़र्ज़ करे कि शायद इसके तुफ़ैल से हक़ तआ़ला शानुहू हमारी इस मुश्किल को आसान कर दे।

इनमें से एक आदमी ने यों दुआ़ की कि ऐ ख़ुदा! तू जानता है कि मेरे मां-बाप थे कि उनके पहले न मैं ख़ुद खाता था, न अपनी बीवी-बच्चों को देता था। एक दिन किसी काम को गया था। बहुत गये रात लौटा, मेरे मां-बाप सो गए थे। एक कासा भर दूध जो मैं लाया था, उनके जागने के इन्तिज़ार में मेरे हाथ में था और लड़के भूख के मारे ज़ार-ज़ार रोते थे। मैं उनसे कहता था कि जब तक मेरे मां-बाप पहले न पी लेंगे, तब तक तुम्हें न दूंगा, वह सुबह तक न जागे और मैं उसे हाथ पर रखे खड़ा रहा, हालांकि मैं और मेरे बच्चे भूखे थे। ऐ ख़ुदा! तू जानता है कि अगर अमल सिर्फ़ तेरी रज़ामंदी के वास्ते था तो तू हमारी मुश्किल आसान कर दे।

जब उसने अ़र्ज़ की तो पत्थर कुछ हटा और एक सुराख़ हो गया, लेकिन इससे बाहर न निकल सकते थे, फिर दूसरे ने यों दुआ़ की कि ऐ ख़ुदा! तू ग़ैब का जानने वाला है, तुझे मालूम है कि मेरे चचा की एक लड़की थी, मैं उस पर आशिक़ था। वह कहा न मानती थी, यहां तक कि एक साल क़हत पड़ा और वह आ़जिज़ हुई, मैं उसके साथ छेड़-छाड़ करने लगा। एक सौ बीस दीनार इस शर्त पर मैंने उसको दिए कि मेरा कहा मान ले। ग़रज़ यह कि जब मैं उस काम के क़रीब हुआ तो उसने कहा कि तू डरता नहीं। अल्लाह तआ़ला की

मुहर उसके बे-हुक्म तोड़ता है।

मैंने डरकर उसे छोड़ दिया और फिर उसका इरादा नहीं किया, हालांकि तमाम जहान की चीज़ों में उससे ज़्यादा मुझे किसी चीज़ की ख़्वाहिश और लालच न था। ऐ अल्लाह! अगर तू जानता है कि सिर्फ़ तेरी ही रज़ा के वास्ते मैंने उज़्र किया तो हमारी मुश्किल आसान कर दे। पत्थर को जुंबिश हुई और ग़ार का मुंह थोड़ा और खुला, लेकिन अभी बाहर निकलने में दुश्वारी थी, फिर तीसरे ने यों दुआ की कि ऐ अल्लाह! तू सब कुछ जानता है, मेरा हाल देख कि एक बार मैंने मज़दूर लगाए थे। सब मज़दूरों को मज़दूरी दे दी, मगर एक मज़दूर मज़दूरी छोड़कर चला गया था। मैंने उसकी मज़दूरी से एक बकरी मोल ले ली और उसकी तिजारत करता रहा, यहां तक कि बहुत सामान जमा हुआ। एक दिन वह मज़दूरी मांगने आया। गाय, बैल, ऊंट, बकरी, लौंडी, ग़ुलाम इन तमाम को आगे करके मैंने उससे कहा कि यह सब तेरी मज़दूरी है। उसने कहा कि तुम मुझसे मज़ाक़ कर रहे हो। मैंने कहा कि नहीं, यह सब तेरे ही माल से हासिल हुआ है और वह सभी उसके हवाले कर दिया, उसमें से ख़ुद कुछ नहीं लिया। ऐ ख़ुदा! अगर तू जानता है कि मैंने यह अमल तेरे ही वास्ते किया था, तो हमारी मुश्किल आसान फ़रमा, पस पत्थर बिल्कुल हट गया, राह खुल गयी, वे तीनों बाहर निकले, मुसीबत का ज़माना कट गया।

(कीमियाए सआदत, पृ० 301)

10. हाथी फिसल जाता है—शैख़ सादी रह० कहते हैं कि मैंने एक बुज़ुर्ग को देखा कि दुनिया से मुंह मोड़ कर ग़ार में रहते थे। मैंने उनसे कहा, शहर में क्यों नहीं आते? ताकि लोगों से मिलकर ज़रा दिल बहले। कहने लगे, वहां हसीन लोग हैं और जहां फिसलन हो,

Maktabe Ashraf

वहां हाथी भी फिसल जाते हैं।

11. बदनज़री से तौबा—इमाम इब्ने जौज़ी रह० फ़रमाते हैं कि हमसे उबैदुल्लाह ने ब्यान किया कि मैंने अपने भाई अबू अ़ब्दुल्लाह मुहम्मद बिन मुहम्मद से सुना, कहते हैं कि मुझसे ख़ैर नसाज ने ज़िक्र किया था कि मैं उमैया बिन सामित सूफ़ी के साथ था। इत्तिफ़ाक़ से उन्होंने एक लड़के की तरफ़ देखा और यह आयत पढ़ी—

وهو معكم اينما كنتم والله بما تعملون بصير

'जहां कहीं तुम होगे, ख़ुदा तुम्हारे साथ है और जो कुछ तुम करते हो वह सब देखता है।' फिर कहने लगे कि अल्लाह तआ़ला शानुहू के क़ैदख़ाने से कौन भाग सकता है, हालांकि उसने इस क़ैदख़ाने को करख़्त और सख़्त फ़रिश्तों से महफ़ूज़ कर रखा है। अल्लाहु अकबर! मेरा उस लड़के की तरफ़ देखना अल्लाह तआ़ला की कितनी बड़ी आज़माइश है। मेरे उस तरफ़ देखने की मिसाल ऐसे है जैसे किसी रोज़ हवा चल रही हो और जंगल में आग लग जाए, ऐसी हालत में वह आग, जो कुछ पाएगी, बाक़ी न छोड़ेगी। फिर कहने लगे कि मेरी आंखों ने मेरे दिल पर जो कुछ बला डाली, मैं उससे ख़ुदा की बख़्शिश का ख़्वास्तगार हूं और मुझे इस बात का डर है कि इस गुनाह से छुटकारा न पाऊं और उसकी मासियत से नजात न मिले, अगरचे मैं क़ियामत के दिन सत्तर सिद्दीक़ों के अमल लेकर जाऊं। यह कहकर रोने लगे कि क़रीब मरने के हो गए। मैंने सुना रोते वक़्त यह शे'र पढ़ते थे—

يا طرف لاشغلنك بالبكا

عن النظر الى البلاء

Maktabe Ashraf

'ऐ आंख! मैं तुझको इस बला अंगेज़ निगाह से हटा कर गिरया व ज़ारी में मश्गूल रखूंगा।' (तलबीसे इब्लीस, पृ० 342)

12. पीछे बिठाना—इमाम इब्ने जौज़ी रह० ने फ़रमाया कि हमसे अबुल क़ासिम रह० ने ब्यान किया कि हम मुहम्मद बिन हुसैन रह० के पास, जो यह्या मुईन रह० के साथी थे, गए। कहा जाता था कि उन्होंने चालीस वर्ष से इंसान की शक्ल की तरफ़ सर उठा कर नहीं देखा है। जब हम उनके पास गए, एक नौजवान लड़का मज्लिस में उनके सामने था, उससे कहा कि मेरे आगे से उठ जा और उसको अपने आगे से उठा कर अपने पीछे बिठा लिया।(वही हवाला, पृ० 348)

13. एक मुहद्दिस की हद दर्जा एहतियात—अबू उसामा ने ब्यान किया कि हम एक शैख़ के पास थे, जो हदीस ब्यान करते थे। उनके पास एक लड़का रह गया कि उनको हदीस सुनाता था। मैंने उठना चाहा, उन्होंने मेरा दामन थाम लिया और कहने लगे कि ठहरो, इस लड़के को फ़ारिग़ हो जाने दो। इस लड़के के साथ ख़लवत में रहना नापसन्द है। (वही हवाला)

14. अमरद के पास दो शैतान—अबू ऐय्यूब ने कहा कि हम अबू नस्र बिन हारिस के साथ थे। उनके सामने एक लड़की जिससे ज़्यादा ख़ूबसूरत हमने नहीं देखी, आ खड़ी हुई और पूछने लगी कि ऐ शैख़! बाब हर्ब किस मक़ाम पर है? उन्होंने जवाब दिया। यही सामने फाटक है, जिसको बाबे हर्ब कहते हैं। इसके बाद एक लड़का भी आया, कभी ऐसा हसीन देखने में नहीं आया। आकर पूछने लगा, ऐ शैख़! बाबे हर्ब किधर है? अबू नस्र ने सर झुका लिया और अपनी आंखें बन्द कर लीं। हमने लड़के से कहा, आओ, क्या पूछते हो? बोला कि बाबे हर्ब कहां है? हमने जवाब दिया, तुम्हारे सामने। जब

Maktabe Ashraf

वह लड़का चला गया तो हमने शैख़ से सवाल किया कि ऐ अबू नस्र! आपके सामने लड़की आई तो आपने उसको जवाब दिया और लड़का आया तो आपने उससे कलाम न किया। कहने लगे, हां, सुफ़ियान सौरी से रिवायत है कि लड़की के साथ एक शैतान होता है और अमरद के साथ दो शैतान हैं। अपने नफ़्स पर दो शैतानों की वजह से डर गया और एक रिवायत है कि लड़के के साथ कुछ ऊपर दस शैतान होते हैं। (ऊपर का हवाला, पृ० 248)

15. आंखें निकाल कर दे दीं—शावाना ने कहा कि हमारे पड़ोस में सालिहा औरत रहती थी। एक दिन बाज़ार गई। किसी आदमी ने उसको देखा, वह उस पर फ़रेफ़्ता हो गया और उसके मकान पर उसके पीछे-पीछे आया। उस औरत ने उससे कहा कि ऐ आदमी! तू मुझसे क्या चाहता है? वह बोला, मैं तुझ पर मफ़्तून हो गया हूं। पूछने लगी कि तुझको मेरी कौन-सी चीज़ पसन्द आई? उसने कहा कि तेरी आंखें अच्छी हैं। वह औरत घर में गई और अपनी आंखें निकाल डालीं और दरवाज़े के पास आकर उस आदमी की ओर फेंकीं और कहा कि ये आंखें ले जा, ख़ुदा तुझको बरकत दे।

16. गुनाह पर गुनाह—इमाम इब्ने जौज़ी रह० फ़रमाते हैं कि कुछ सूफ़ी लोग ऐसे हैं कि जिनको उनके नफ़्स ने फहश की ओर बुलाया, उन्होंने अपने आपको हलाक कर दिया। अबू अ़ब्दुल्लाह हुसैन बिन मुहम्मद अफ़ग़ानी नक़ल करते हैं कि बलादे फ़ारस की तरफ़ एक बड़ा नामी सूफ़ी था। इत्तिफ़ाक़ से एक नौजवान के इश्क़ में मुब्तला हो गया, फिर अपने नफ़्स पर क़ाबू न पा सका, यहां तक कि फ़हश का ख़्वाहिशमंद हुआ, पस मुराक़बा में गया और अपने इरादे पर पशेमान हुआ। उसका मकान एक ऊंची जगह पर वाक़े था और उसके अक़ब में एक दरिया रवां था। जब नदामत बढ़ी तो

Maktaba Ashraf

मकान की छत पर गया और दरिया में कूद गया और यह आयत पढ़ी—

فتوبوا الی بارءکم فاقتلوا انفسکم

'ऐ बनी इसराईल! ख़ुदा के आगे तौबा करो, अपने आपको हलाक करो, फिर पानी में डूब मरा। इब्ने जौज़ी रह० कहते हैं कि इब्लीस को देखो कि एक तो उस बेचारे को यह सिखाया कि अमरद को देखे, फिर यहां से चढ़ा कर इस बात पर आमादा किया कि हर वक़्त उसी को देखता रहे, यहां तक कि उसके दिल में अमरद की मुहब्बत क़ायम कर दी और उसको फ़हश की हिर्स दिलाई। फिर जब उसको महफ़ूज़ रह जाता देखा तो जिहालत से उसको यह मामला अच्छा कर दिखाया कि अपने आपको क़त्ल कर डाले। देखने में ऐसा मालूम होता है कि उस आदमी ने फ़हश का सिर्फ़ दिल से इरादा किया था और क़तई इरादा न किया था और सिर्फ़ नीयत गुनाह की करना शरीअ़त में माफ़ है। अल्लाह के रसूल सल्ल० के इर्शाद की वजह से मेरी उम्मत से दो गुनाह माफ़ कर दिए गए, जिनका ख़्याल दिल में आता है फिर वह आदमी अपने इरादे पर शर्मिंदा भी हुआ और शर्मिंदा होना ख़ुदा से तौबा है, लेकिन शैतान ने उसको यों समझाया कि तौबा का कमाल ख़ुदकुशी है जो बनी-इसराईल का अ़मल था, हालांकि वे ख़ुदा की तरफ़ से मामूर थे, जैसा कि फ़रमाया—

فاقتلوا انفسکم

'फ़क़्तुलू अन्फ़ुसकुम' (अपने आपको मार डालो) और हम लोगों को इस फ़े'ल (काम) से मना किया गया है। चुनांचे इर्शाद है—

ولا تقتلوا انفسكم

(ख़ुदकुशी मत करो) ग़रज़ यह कि यह सूफ़ी बड़ा गुनाह कर बैठा।

सहीहैन में हज़रत रसूल अकरम सल्ल० से रिवायत है कि जो आदमी पहाड़ (की ऊंचाई) से नीचे गिरे और अपने आपको हलाक कर दे तो वह दोज़ख़ की आग में गिरता है, हमेशा-हमेशा के लिए वहीं रहेगा। (तलबीसे इब्लीस, पृ० 344)

17. पांव पर नज़र जमाए रहते थे—हज़रत शैख़ुल हदीस रह० आप बीती न. 6 में तहरीर फ़रमाते हैं कि मेरे चचा जान एक ज़माने में, जबकि हाजी हाफ़िज़ क़मरुद्दीन साहब बीमार थे, तो उनकी नियाबत में जामा मस्जिद, सहारनपुर में पांचों वक्त़ नमाज़ पढ़ाने के लिए मदरसा से तशरीफ़ ले जाया करते थे। अस्र के वक़्त जाकर मग़रिब की नमाज़ पढ़ा कर तशरीफ़ लाया करते थे। इस तशरीफ़ आवरी में यह नाकारा भी कभी-कभी साथ हुआ करता था। मैं हमेशा ग़ौर से देखता था कि मदरसे से लेकर मस्जिद तक अपने पांव पर नज़र जमाए रखते थे कि बाज़ार में से रास्ता था, मगर निगाह कभी-भी इधर-उधर दुकानों पर नहीं पड़ती थी। मैंने अपने हज़रत क़ुद्द-स सिर्रहू को बारहा देखा है कि रास्ते में तशरीफ़ ले जाते वक़्त बहुत कम निगाह उठाते थें, ज़मीन ही पर अकसर निगाह होती थी। (पृ० 418)

अजीब वाक़िया—एक निहायत हसीन व जमील नौजवान मुत्तक़ी परहेज़गार मस्जिद में रहा करता था। हर वक़्त इबादत में मश्गूल रहता था। एक बार वह मस्जिद में आ रहा था कि एक निहायत ही हसीन व जमील औरत मस्जिद में मिली जो कि हुस्न व जमाल में रश्के क़मर थी। उसने कहा कि ऐ नौजवान! मेरी एक बात सुनता

Maktabe Ashraf

जा। उन्होंने उसकी तरफ़ तवज्जह नहीं दी और उसकी बात का जवाब भी नहीं दिया। कुछ दिनों के बाद फ़िर ऐसा ही वाक़िया पेश आया। उस लड़की ने फिर यही कहा कि मेरी एक बात सुनते जाओ।

वह थोड़ी देर रुके और कहा कि यह जगह तोहमत की है, ऐसी जगह पर बात करना मुनासिब नहीं और औरत ने कहा कि मैं भी समझती हूं कि आ़बिदों और ज़ाहिदों के लिए थोड़ी चीज़ भी सख़्त होती है, मगर मेरी हालत तुम्हारी मुहब्बत में बे-क़ाबू है। उस नौजवान ने उसकी बात सुनी और मस्जिद में चले गए, मगर वहां जाने के बाद जब नमाज़ की नीयत बांधी तो कुछ पता न चला कि क्या पढ़ें और किस तरह पढ़ें, तो उसने एक परचा लिया और उस पर लिखा *'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'* ऐ औरत! जब कोई अल्लाह की नाफ़रमानी करता है तो पहली बार तो मालिक हिल्म का मामला फ़रमाता है, दूसरी मर्तबा सत्तारी फ़रमाता है और तीसरी मर्तबा ऐसा नाराज़ होता है कि आसमान-ज़मीन भी उससे तंग हो जाते हैं। क़िस्सा बहुत तवील है, मुझे सिर्फ़ इस तरफ़ मुतवज्जह करना है कि मालिक अपने हिल्म व करम से पहले दरगुज़र और सत्तारी फ़रमाता है। ख़ुशनसीब है वह जिसको अल्लाह तआ़ला बुरी नज़र से बचाए रखे और दूसरे दर्जे में वह, जिसको मालिक तौबा की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। (फ़ज़ाइले ज़िक्र, पृ० 124, आप बीती न. 6, पृ० 420)

19. कलिमा से महरूमी—फ़ज़ाइले ज़िक्र में एक क़िस्सा लिखा है कि एक आदमी का जब मरने का वक़्त आया तो उसको लोग कलिमा की तलक़ीन करते थे, तो कहने लगा कि मुझसे कहा नहीं जाता। लोगों ने कहा, क्या बात है? उसने कहा कि एक औरत मुझसे तौलिया ख़रीदने आई थी, मुझे वह अच्छी लगी, मैं उसे देखता रहा।

(आप बीती, न. 6, पृ० 420)

Maktabe Ashraf

20. क़ल्ब भी ख़राब है—मुफ़ती महमूद हसन साहब गंगोही मद्दज़िल्लहू ने हज़रत मौलाना अ़ब्दुल क़ादिर साहब से सुना हुआ था, उनके शैख़े आ़ला हज़रत रायपुरी यानी मौलाना अ़ब्दुर्रहीम साहब का वाक़िया ब्यान किया कि शैख़ आ़ला एक बार वुज़ू फ़रमा रहे थे। एक पैर धो चुके थे, दूसरा धो रहे थे कि दो आदमी आए, एक पहले से बैअ़्त था, दूसरा नया आदमी था। जो आदमी पहले से बैअ़्त था, उससे फ़रमाया कि तुम्हारा तो कुछ बिगड़ा नहीं, सुस्ती व चुस्ती आदमी के साथ लगी हुई है। (यह शख़्स ज़िक्र की पाबन्दी नहीं करते थे) और नए आदमी से फ़रमाया कि एक तो मर्ज़ उसकी आंख में है और क़ल्ब भी ख़राब है, (बदनिगाही का मर्ज़ और अ़क़ीदे भी सही नहीं थे)

हज़रत सूफ़ी अ़ब्दुर्रब्ब रह० साहब का मकतूबे गिरामी—एक दोस्त ने बतलाया कि अब से लगभग 20-22 साल पहले हज़रत सूफ़ी साहब हज के सफ़र के सिलसिले में बम्बई तशरीफ़ लाए और कुछ दिन क़ियाम फ़रमाया। अपने दूसरे अकाबिर की तरह मैं भी उनकी ख़िदमत में हाज़िरी का एहतिमाम करता था। मेरे कुछ बुज़ुर्गों ने हज़रत सूफ़ी साहब से मेरा तआ़रुफ़ भी करा दिया था। एक दिन तंहाई में हज़रत सूफ़ी साहब ने मुझसे फ़रमाया, तुम्हारे हालात ज़ाहिर में अच्छे हैं और फ़्लां बुज़ुर्ग ने तुम्हारे बारे में बड़ा हुस्ने ज़न भी ज़ाहिर किया है, लेकिन अपने दिल में तकद्दुर भी महसूस करता हूं, क्या बात है?

फिर कई मासियतों का ज़िक्र किया। आख़िर में फ़रमाया, तुम्हारे अन्दर बदनिगाही तो नहीं है? जब सूफ़ी साहब ने यह फ़रमाया, तो मेरी आंखों में आंसू आ गए और मैंने अ़र्ज़ किया कि वाक़िया है कि

मैं इस बीमारी में बहुत बुरी तरह मुब्तला हूं और इस पर किसी तरह मेरा क़ाबू नहीं चलता। सूफ़ी साहब ने कुछ पढ़ा, मुझे सीने से लगा कर दबाया, और तवज्जह दी और दुआ फ़रमाई। मुझे बिल्कुल ऐसा मालूम हुआ कि वह बीमारी इस तरह निकल गई जिस तरह आटे में से बाल खींच लिया जाए। फिर मुद्दत तक मेरा यही हाल रहा और मैं उस बीमारी से बिल्कुल महफ़ूज़ रहा। कई साल के बाद फिर वही मर्ज़ पैदा हो गया। मैंने हज़रत सूफ़ी साहब को ख़त लिखा और अपनी हालत अर्ज़ की। इसके जवाब में उनका मुफ़स्सल मकतूब आया। मकतूब का वह हिस्सा जो मर्ज़ बदनिगाही से मुतअ़ल्लिक़ है, पढ़ने वालों के लिए नीचे दिया जा रहा है।

मर्द व औरत के दर्मियान जिंसी मैलान बिल्कुल फ़ितरी बात है, जिसको अल्लाह तआ़ला ने बहुत-सी मस्लहतों और फ़ायदों के लिए बनाया है। जैसे नस्ल का चलना, तमद्दुन का क़ायम होना, मआ़शरत का सही होना, मुहब्बत के जज़्बात का लुत्फ़ हासिल होना और मुहब्बत के फ़ायदों को देखना और उन सबको आख़िरत के लिए और अल्लाह तआ़ला के लिए मख़्सूस करने की लियाक़त पैदा करना, लेकिन जब इस रुझान और मैलान का ग़लत इस्तेमाल होता है तो नतीजे भी बिल्कुल उलटे और ख़ौफ़नाक पैदा होते हैं। जैसे नस्ल का ख़राब होना, शैतान की हुकूमत का क़ायम हो जाना, अल्लाह तआ़ला से तअ़ल्लुक़ ख़त्म हो जाना और उसके बुरे नतीजे देखना वग़ैरह, वग़ैरह। यों तो हर आदमी बदनिगाही को बुरा कहता है, लेकिन देखना यह है कि क्या यह कहना रस्मी है या हक़ीक़ी? अगर रस्मी होगा तो इससे कभी न निजात मिलेगी और अगर हक़ीक़ी होगा तो उसकी कभी हिम्मत न होगी और अगर शैतानी इग़वा से इब्तिला हो

Maktaba Ashraf

गया तो जल्द तौबा नसीब होगी। हक़ीक़ी हैसियत हासिल करने की कुछ तदबीरें हैं और आपको उन्हीं की ज़रूरत है, इसलिए उन तदबीरों को नीचे लिखता हूं।

1. अपनी बीवी की सेहत और तन्दुरुस्ती की हिफ़ाज़त कीजिए।

2. पोशाक, ज़ेवरों और आराइश (साज-सज्जा) से उसको अपने लिए दीदा-ज़ैब बनाइए।

3. मामूली दर्जे की बदनिगाही के उभार लेने पर अपनी बीवी से अपनी ख़्वाहिश को पूरा करके शैतानी तीरों का तरकश ख़ाली कर दीजिए।

तंबीह—लेकिन इन तीनों बातों में इसका ख़्याल रहे कि यह सिर्फ़ नफ़्सानी लह्व व लइब की शक्ल अख़्तियार न करे और शह्वानी ख़्वाहिशात इन बातों की तरफ़ इतने मुतवज्जह न हो जाएं कि दूसरे मामलों में ख़लल पड़ने लगे।

4. जिस तरह हर मर्ज़ मकरूह और ख़ौफ़नाक होता है और सब मानते हैं, लेकिन अगर इस मर्ज़ की शक्ल मिसाली दिखा दी जाए तो शायद हमेशा के लिए उससे नफ़रत पैदा हो जाए। जैसे डॉक्टर कहते हैं कि तपेदिक़ के कीड़े यानी जरासीम अलग होते हैं और कोढ़ के अलग। यह बिल्कुल सही है। बिल्कुल इसी तरह हर जरासीम अलग-अलग रंग और क़िस्म के होते हैं और उनके मख़्सूस असरात पैदा होते हैं।

बदनिगाही भी एक मर्ज़ और मअ़सियत है, इसके जरासीम की शक्ल दिखा देना मेरे इम्कान में नहीं, लेकिन इनका कुछ ब्यान किए देता हूं।

बदनिगाही के साथ ही कुछ जरासीम पैदा होते हैं, जो तरह-तरह के ख़ौफ़नाक असरात पैदा करते हैं। इसी तरह दूसरे मआसी के जरासीम बनते हैं। जरासीम के साथ कुछ ख़ौफ़नाक गैस भी बनती है, कुछ ज़हर बनते हैं, कुछ की शक्ल धुएं की होती है, कुछ की शक्ल ख़ून की, कुछ की पीप की, वग़ैरह-वग़ैरह।

फिर एक बार जब ये जरासीम और गैस और ज़हर पैदा हो जाते हैं, तो ये बराबर तरक़्क़ी करते हैं और अपना असर डालते रहते हैं। कुछ गैस बीनाई को कमज़ोर करते हैं कुछ ज़हर दिल को कमज़ोर करते हैं और कुछ जरासीम किसी और उज़्व को नुक़सान पहुंचाते हैं। यहां तक कि ज़िंदगी भर उनके नुक़सान चलते हैं और बन्दा ग़ाफ़िल रहता है। घाटे तरह-तरह के होते हैं और बन्दे की समझ में नहीं आता। हदीसों में उनके इशारे हैं, जैसे ज़िना से क़हत पड़ता है, ताऊन आता है, वग़ैरह वग़ैरह। इसी तरह बदनिगाही से रिज़्क़ की तंगी, औलाद की हिरमां नसीबी और दिल की परेशानी जैसी बलाएं लाहिक़ होती हैं। इन सबका जी लगाकर तसव्वुर बांधना और ख़ूब बार-बार सोचना और मुराक़बा करना हक़ीक़ी हैसियत पैदा करने में मददगार होगा। आपको चाहिए कि जब ऐसी बरअंगेख़्तगी (उभार) पैदा हो तो पहली फ़ुरसत में वुज़ू करके नमाज़े तौबा दो रकअत पढ़कर तौबा करें और इस ख़बीस शैतानी मर्ज़ और मासियत के दुन्यवी और उख़्रवी नुक़सान सोचें, यहां तक कि दिल में यह बात बैठ जाए कि यह महज़ हिमाक़त और बे-सूद शग़्ल है और उसके नुक़सान ज़्यादा-से-ज़्यादा हैं। असल में मासियत के होने पर पकड़ होती है, इसलिए काफ़ी है तो शरई तौर पर इतना भी है कि जब जोश उभार पर हो तो उसको दबा दिया जाए और उसको न तो

बाक़ी रखा जाए और न उससे लुत्फ़ उठाया जाए, न उस पर अमल किया जाए तो पकड़ होगी और जरासीम और ज़हर और गैस न पैदा होंगे। लेकिन मुजाहदा करके इस मर्ज़ को ज़ईफ़ न किया जाए तो बराबर कशमकश रहेगी। इसलिए सूफ़िया किराम ने मुजाहदात को अख़्तियार किया और कराया है। बदनिगाही का मर्ज़ मुजाहदे से इस तरह बदल जाता है और दूर हो जाता है कि सिवा अपनी मनकूहा के दूसरी ग़ैर-महरम पर नज़र पड़ने से अन्दर मतली होने लगती है और घिन मालूम होती है। इसके लिए कोशिश करना महज़ इसलिए ज़रूरी है कि आसानी से हक़ के रास्ते पर चलाया जा सके, पस मैं उन मुजाहदों का ज़िक्र नीचे करता हूं—

1. रास्ते में चलते वक़्त आंख से सिर्फ़ इस क़दर काम लिया जाए जितना रास्ता देखने के लिए ज़रूरी हो, वरना निगाह को नीचा रखा जाए। रास्ता चलने से पहले उसका इरादा किया जाए और रास्ता चलते वक़्त उस पर अ़मल किया जाए और रास्ता ख़त्म हो जाने पर इसका जायज़ा लिया जाए कि नज़र नीची रखना नसीब हो या नहीं।

2. अगर नज़र नीची रखना नसीब न हुआ तो वुज़ू करके दो रकअ़त नफ़्ले तौबा पढ़ी जाए और नए सिरे से अ़ह्द किया जाए कि धीरे-धीरे कुछ दिनों में यह बात पैदा हो जाए कि रास्ता चलते वक़्त आंख न बहके।

3. रास्ता चलते वक़्त हाथ में तस्बीह रखी जाए और रास्ते के लिए कोई मामूल मुक़र्रर किया जाए। जैसे, रास्ता चलना हो तो *'अस्तग़्फ़िरुल्लाह'* का विर्द रखेंगे या *'ला इला-ह इल्लल्लाह'* का विर्द रहेगा।

Maktabe Ashraf

4. अगर अजनबीया या ग़ैर-महरम औरत पर नज़र पड़ जाए तो तुरन्त नज़र नीची करके अपनी मां की सूरत का तसव्वुर करना शुरू किया जाए और जब तक दिल और नज़र पाक न हो जाए मां का तसव्वुर बाक़ी रखा जाए।

5. अगर जान-बूझ कर नफ़्स की शरारत या शैतानी बहकावे से ग़ैर-महरम को देखने के लिए नज़र उठाई जाए तो फ़ौरन नज़र नीची करके जहन्नम का तसव्वुर किया जाए और सोचा जाए कि उसकी सज़ा में आंखों में सीसा भरा जा रहा है।

6. जहन्नम के तसव्वुर के अलावा जितनी बार ग़ैर-महरम पर नज़र पड़े, उतने ताज़ियाने अपने हाथ से तंहाई में अपनी नंगी पीठ पर मारे जाएं। एक सूत की दो-दो गज़ की रस्सी को दोहरी करके जेब में रखें और उसका नाम शरीअ़त का ताज़ियाना (कोड़ा) रखें और जब बद-निगाही हो जाए, किसी क़रीब की मस्जिद में या किसी तंहाई में जाकर अपनी नंगी पीठ पर ताज़ियाने लगाएं और अगर कोई तंहाई की जगह रास्ते में मयस्सर न आए तो यह अमल वापसी में घर में करें।

7. जब बदनिगाही हो जाए तो हर बदनिगाही पर इतनी रकअ़तें नफ़्लें जुर्माने के तौर पर पढ़ें कि नफ़्स को शाक़ हों, जैसे 20 रकअ़त।

8. जब बदनिगाही हो जाए, तो जुर्माने के तौर पर इतनी रक़म सदक़ा करें कि नफ़्स पर शाक़ हो जैसे एक रुपया।

9. जब बदनिगाही हो जाए तो नीचे की इबारत अपने को अपने नाम से मुख़ातब करके सुनाएं—ऐ फ़लां! तेरा नाम इतना बुलन्द, मगर तेरी हरकतें ऐसी पस्त! ऐ फ़लां! तू मख़्लूक़ के सामने मौलवी और मौलाना बना फिरता है और मख़्लूक़ से नज़र चुरा कर ज़ानियों की

Maktaba Ashraf

हरकतें करता है, जो मख़्लूक़ से तो पोशीदा होती हैं, लेकिन ख़ालिक़ इन्हें सब जानता है। ऐ फ़्लां! तू तसव्वुफ़ और सुलूक पर मख़्लूक़ के नज़दीक गामज़न है और बुज़ुर्गों से तअ़ल्लुक़ रखता है और तेरा असल तअ़ल्लुक़ उन हरकतों से है जो जहन्नम तक पहुंचाने वाली हैं। ऐ फ्लां! तू होश व हवास रखता है, लेकिन ऐसी हिमाक़त में मुब्तला है जो सरासर घाटे की वजह है और नफ़ा बिल्कुल नहीं है। ऐ फ्लां! तेरी क्या अच्छी तिजारत है कि इन हरकतों की वजह से तू दुनिया के अ़ज़ाब कमा रहा है और आख़िरत का अ़ज़ाब तेरे इन्तिज़ार में है। क्या तू उस वक़्त तक तौबा न करेगा जब तक तू इस काम से मजबूर न हो जाए। बस अब तौबा कर, मैं उम्मीद करता हूं कि इन्शाअल्लाह इस क़दर तहरीर अगर आप ग़ौर से पढ़ेंगे और उस पर अमल करेंगे, तो यह ख़बीस मर्ज़ बाक़ी न रहेगा। अल्लाह इनको और आपको और सब को तहारत व पाकीज़गी इनायत फ़रमाए और गन्दगियों से बचाए।

मख़्लूक़ात को नहीं, बल्कि ख़ालिक़ को देख—हज़रत पीराने पीर शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रह० के इर्शाद पर इस रिसाले को ख़त्म करता हूं जो **'फ़ुतूहुल ग़ैब'** से लिया गया है।

हज़रत क़ुतुब रब्बानी रह० ने इर्शाद फ़रमाया कि अपनी ज़ाहिरी और बातिनी आंखों को ग़ैरुल्लाह से हटा कर सिर्फ़ बारी तआ़ला की हस्ती पर मुर्तकिज़ कर दे। मख़्लूक़ात को न देख, बल्कि ख़ालिक़ परवरदिगार को और अगर मख़्लूक़ात का मुशाहदा करना भी है तो तेरी नज़र का मुन्तहा इस मख़्लूक़ात का ख़ालिक़ (पैदा करने वाला) और सानेअ़ (बनाने वाला) होना चाहिए ताकि उसकी अज़मत और सनअ़त का इरफ़ान हासिल कर सके और उसकी तौहीद को समझे।

इसी तरह मैं तुझे ताकीद करता हूं कि इस कायनात की जिहालत यानी समतों में भी न देख, बल्कि ग़ैर-फ़ानी और अबदी हस्ती का मुशाहदा कर जो ज़मां व मकां और जिहालत की क़ैदों से बिल्कुल आज़ाद और बालातर है। पस जब तक तेरी नज़र महज़ मख़्लूक़ात में ऐसी उलझी रहेगी, तुझ पर अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात के असरार मुन्कशिफ़ नहीं हो सकते, इसलिए तू एक जन्नत तौहीद की ख़ातिर देकर तमाम जन्नतों से रूगरदानी अख़्तियार कर ले। उस वक़्त तेरी चश्मे क़ल्ब पर अल्लाह के फ़ज़्ले अज़ीम की जेहत खुल जाएगी और तू अज़ली और अबदी हक़ीक़तों को नूरे ईमान की रौशनी में अपने सामने वाज़ेह पाएगा, फिर तेरे बातिन से नूरे तौहीद तेरे ज़ाहिर पर भी फ़गन होगा और तेरे आज़ा व जवारेह से करामत का जुहूर होगा। लेकिन अल्लाह तआला पर एक बार निगाह व तवज्जह को मुरतकिज़ कर देने के बाद, फिर तू ग़ैरुल्लाह से और मख़्लूक़ात को अपनी तवज्जह का मर्कज़ बनाएगा तो शिर्क का मुर्तकिब होगा, तेरी चश्मे क़ल्ब पर परदे पड़ने लगेंगे, जिसके नतीजे में तू क़ब्ज़ की कैफ़ियत में मुब्तला होगा। यह अक़ूबत होगी शिर्क की और ग़ैरुल्लाह में मशग़ूल व मुन्हमिक होने की। फिर जब तू अल्लाह की ज़ात व सिफ़ात को यक्ता जाने अपने इश्क़ व तवज्जह का मर्कज़ उसी को क़रार देगा, उसके फ़ज़्ल व करम पर नज़र रखेगा और अपनी उम्मीदें और तवक़्क़ुआत उसी से वाबस्ता करेगा और अपने आपको मा सिवा बेगाना व ना-आश्ना बनाएगा तो अल्लाह तआला तुझे अपने से नज़दीकतर करेगा और तुझे मक़ामे सिद्क़ में जगह देगा, फिर वह गूना गूं नेमतें तुझ पर वसीअ् व बसीत करेगा। हर मुश्किल में तेरी इमदाद इनायत फ़रमाएगा और हमेशा तेरा हाफ़िज़ व नासिर होगा। पस अल्लाह की ज़ात पर अपनी निगाह व तवज्जह मुरतकिज़ करने

Maktabe Ashraf

के बाद ज़फ़ानी बग़ैर अल्लाह और बाक़ी-बिल्लाह हो जाएगा जो मोमिन की हयाते तैयिबा का इंतिहाई मक़सूद है।

(फ़ुतूहुल-ग़ैब, पृ० 178)

आखिरी गुज़ारिश—अल्लाह तआला की नेमतों में आंख भी एक बड़ी नेमत है। इंसान इस नेमत की क़द्रदानी भी कर सकता है और बे-क़द्री और नाशुक्री भी। नाक़द्री के नुक़सान आपके सामने आ चुके हैं और बदनज़री की मुहलिक बीमारी से नजात पाने के तरीक़े भी ब्यान हो चुके हैं। अब सिर्फ़ यह है कि अक़्लमंद वह है जो अमल करे। अल्लाह पाक का इर्शाद है कि—

ثم لتسئلن یومئذٍ عن النعیم

'फिर ज़रूर तुमसे उस दिन नेमतों के बारे में जवाब तलबी की जाएगी और उस दिन जिन लोगों ने कुफ़राने नेमत नहीं किया होगा, बल्कि शुक्रगुज़ारी कर रहे होंगे, वे इस मुहासबे में कामयाब रहेंगे और जिन लोगों ने अल्लाह पाक की नेमतों का हक़ अदा नहीं किया होगा, अपने क़ौल व अ़मल से या दोनों से उनकी नाशुक्री की होगी, वे इस मुहासबे में नाकाम होंगे।

अल्लाह तआला तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए कि हम आप उसकी नेमतों का हक़ बजा लाएं और क़ियामत के दिन सुर्ख़रू बनें। आमीन!

Maktabe Ashraf

हदीस शरीफ़ में अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नज़र को "शैतान के तीरों में से एक ज़हर का बुझा हुआ तीर" फ़रमाया है। आज के उर्यानी (नंगापन) और बेहयाई के माहौल में जहां हर तरफ़ आप के ईमान को ख़त्रा है, शैतान आप ही की निगाह से आप के ईमान को छलनी कर रहा है।

इस छोटी सी किताब में शैतान के इसी हमले से बचने की तद्बीरें कुरआन व हदीस की रौशनी में मुस्तनद किताबों के हवाले से बताई गई हैं।

Maktabe Ashraf